

W.J.W RICHARDS. RUTLAM, C.I

Hidden Treasure

छुपा हुआ खज़ाना



1923

Hidden Treasure

By

W.J.W RICHARDS. RUTLAM, C.I

In form of a debate between a Maulvi, a Christian preacher and a convert from Hinduism, questions such as Salvation, the Sonship of Christ, Paraclete etc., are discussed, but hardly adequately

छुपा हुआ खज़ाना

पंजाब रिलीजियस बुक सोसाइटी

अनारकली, लाहौर

1923 ई.

फेहरिस्त मज़ामीन

छुपा हुआ खज़ाना.....	4
मुहम्मद हुसैन के लड़कपन का ज़माना.....	4
मुहम्मद हुसैन के लड़कपन का ज़माना मसीही मज़हब से नफ़रत। उस का मिशन स्कूल को जाना। इस्लामिया कॉलेज में दाखिल होना। मसीही मुनादों से बहस शुरू करना	
रोज़ अक्वल की बहस.....	7
दीन मसीही और दीन मुहम्मदी में राह नजात के मुताल्लिक बड़ा मुखालिफ़	
रोज़ दुवम.....	13
फ़ज़ल मसीह की ज़िंदगी का अहवाल। मसीह खुदा का बेटा। क्या इन्जील में तहरीफ़ हो गई है?	
रोज़ सोइम.....	20
प्रेम मसीह की ज़िंदगी का मुख्तसर अहवाल। क्या इन्जील मन्सूख हो चुकी? क्या मसीह की बादशाहत मुहम्मद साहब को दी गई।	
रोज़ चहारुम.....	26
बलवंत सिंह की ज़िंदगी का मुख्तसर अहवाल। क्या इन्जील से मुहम्मद साहब का नबी होना साबित होता है। फ़ार-कलेत कौन है?	
रोज़ पंजुम.....	34
गंगाराम की ज़िंदगी का अहवाल	
रोज़ शश्म.....	43
मसअला तस्लीस। मुहम्मद हुसैन का मसीही होना। और एक ज़बरदस्त मुनाद बनना।	

छुपा हुआ खज़ाना

मुहम्मद हुसैन के लड़कपन का ज़माना

मुहम्मद हुसैन एक आला घराने में पैदा हुआ। चूँकि अपने बाप का एक ही बेटा था। इसलिए बड़े नाज़ो नअम (लाड प्यार में) में इस की परवरिश हुई। जब ये आठ बरस का हुआ तो इस के बाप को इस की तालीम की फ़िक्र हुई। मुहम्मद हुसैन के वालदैन एक क़स्बे में रहते थे। और उन्हें मसीहियों से सख़्त नफ़रत थी। चुनान्चे कितने ही मसीही मुनादों को मुहम्मद हुसैन के बाप ने तरह तरह से तकलीफ़ भी दी थी। पर चूँकि इस क़स्बे में सिवा मिशन स्कूल के और कोई मदरिसा ना था। इसलिए मुहम्मद हुसैन मजबूरन इसी स्कूल को भेजा गया।

इस स्कूल में एक होशियार मसीही उस्ताद था। और उस के पास करीब तीस एक लड़के हिंदू और मुसलमान और मसीहियों के पढ़ते थे। बड़े शहरों के अंग्रेज़ी स्कूलों की तरह यहां मेज़ कुर्सी या बेंच ना थीं। पर उस्ताद के बैठने को एक मोढ़ा (सरकण्डों और मूँज की बनी हुई कुर्सी) था। और लड़के सब नीचे फ़र्श पर बैठते थे। जैसे सब कसबाती मिशन स्कूलों का दस्तूर है। यहां भी पहले घंटे में बाइबल पढ़ाई जाती थी। और इस से मुहम्मद हुसैन और उस के वालदैन को सख़्त नफ़रत थी। इसी वजह से अक्सर मुहम्मद हुसैन को स्कूल में ज़रा देर से भेजते थे। और इसी कोशिश में रहते थे, कि वो बाइबल के इस घंटे से गैर-हाज़िर रहे। तो भी मिशन स्कूल वालों का तो मक़सद ही ये है कि दुनियावी तालीम के साथ दीनी तालीम ज़रूरी दी जाये। सो तरह तरह से कुछ ना कुछ मसीही तालीम इस छोटे लड़के के कान में पड़ ही जाती थी। जब करीब एक साल मुहम्मद हुसैन को इस मदरिसे में पढ़ते हो गया। तो अगरचे सिलसिले-वार और लड़कों की मानिंद उसे बाइबल की बातें याद ना थीं। मगर बहुत सी सच्ची बातें उस के ज़हन नशीन हो चुकी थीं।

अल-ग़र्ज़ मुहम्मद हुसैन को इसी स्कूल में पढ़ते पढ़ते चार बरस हो गए और अब उस की उम्र बारह बरस की हुई। इस अर्से में इस क़स्बे में मिशन का काम यहां तक बढ़ गया कि छोटा सा गिरजाघर वहां बन गया और करीब बीस घराने मसीहियों के वहाँ आबाद हो गए। बड़े पादरी साहब भी वहां रहने लगे। और अब ये छोटा सा स्कूल मिडल तक बढ़ा

दिया गया। एक उस्ताद की जगह अब चार उस्ताद हो गए। और उस्तादों के लिए कुर्सियां और लड़कों के लिए बेंच भी मुहय्या हो गए। मुहम्मद हुसैन बड़ा तेज़ फ़हम (जल्दी समझने वाला) व होनहार लड़का था। जो बात एक दफ़ाअ उस के ज़हन नशीन हो जाती उस को वो कभी ना भूलता था। इस अर्से में उसने उर्दू की चार किताबें पढ़ लीं। और अंग्रेज़ी की दो। और कुछ हिसाब जुगराफ़िया भी सीख लिया। बाप उस की नुमायां तरक्की को देखकर फूला ना समाता था। घर में पहनने को बहुत था। और कोई जल्दी ना थी, कि मुहम्मद हुसैन स्कूल छोड़कर नौकरी तलाश करे चुनान्चे उस के बाप का मुसम्मम (मज़बूत, पक्का, पुख़्ता) इरादा था, कि जब ये यहां के स्कूल से मिडल पास कर लेगा। और इस लायक भी हो जाएगा कि अपने को सँभाल सके तो किसी इस्लामिया कॉलेज को भेजूँगा जहां तक मुम्किन हो वहां इल्म तहसील (हासिल करना, वसूल करना) कराउंगा।

जब मुहम्मद हुसैन करीबन 14 बरस का हो गया, और मिडल क्लास में पहुंचा। तो उस की जोशीली तबीयत अक्सर भड़क उठती थी। ये दूसरे लड़कों से इन्जील की जिल्दें छीन लेता और फाइ के फेंक देता था और मसीही लड़कों को तरह-तरह से सताया करता था। क्योंकि जब ये स्कूल से घर वापिस जाता। और थोड़ी देर खेल कूद के बाद मौलवी साहब उसे कुर्आन पढ़ाने आते, तो वो उसे ये तालीम दिया करते थे, कि मसीही लोग बड़े दगाबाज़ हैं। उन्होंने असली इन्जील तो गायब कर दी और नक़ली इन्जील बना ली है। उनकी बात हरगिज़ नहीं मानना चाहिए। उधर माँ बाप ने भी इस के दिल में मसीहियों की तरफ़ से नफ़रत पैदा करने में कोई दक्कीका (कोई बहुत छोटी चीज़, बात) बाकी ना छोड़ा था। इस सबब से जूँ जूँ मुहम्मद हुसैन बड़ा होता और क़दआवर जवान बनता गया तब तब वो मसीहियों का जानी दुश्मन होता गया। ख़ैर जो हो सो हो इन्जील की बातें भी मानिंद खमीर के उसके दिल में अपना असर कर रही थीं। और कभी-कभी उस के दिल में एक अजीब जंग हुआ करती थी।

पंद्रह बरस की उम्र में मुहम्मद हुसैन ने मिडल का इम्तिहान बा-आसानी पास कर लिया और अगरचे उस के बाप का इरादा ना था, तो भी माँ के ब-ज़िद होने से उस की शादी का इंतज़ाम करना पड़ा। इधर उधर से खबरें तो आ ही रही थीं। सो एक शरीफ़ जादी से उस का निकाह हो गया। उस की ज़िंदगी में इस बड़ी तब्दीली के होने से करीब एक साल उस का ज़ाए गया लेकिन उस के बाप ने जल्द लिखा पढ़ी कर के एक इस्लामिया स्कूल में उसे भेज दिया। जहां दुनियावी तालीम के साथ ही साथ बजाए मसीही तालीम के

उसे मुहम्मदी तालीम मिलने लगी। यहां भी मुहम्मद हुसैन ने नुमायां तरक्की की। और दो ही साल के अंदर एंटर का इम्तिहान पास कर लिया। इम्तिहान के बाद वो सीधा घर आया। और पुराने मौलवी साहब ने गर्मियों की छुट्टी भर मसीहियों के बर-खिलाफ़ खूब ही मुहम्मद हुसैन के कान भरे। बाप का इरादा था कि वो कॉलेज में एफ़. ए. और बी. ए. की तालीम पूरी करे। पर चूँकि अब मुहम्मद हुसैन के बेड़ियाँ पड़ चुकी थीं। उसे घर छोड़ कॉलेज को जाना गवारा ना हुआ लिहाज़ा और आगे तहसील इल्म का खयाल छोड़ दिया। और सोचने लगा कि क्या करना चाहिए। हम ऊपर लिख चुके हैं कि घर से वो आसूदा हाल (खुश-हाल) था। और इसलिए हुसैन को तलाश-ए-मुआश (रोज़गार की तलाश) की चंदाँ ज़रूरत ना थी।

मुहम्मद हुसैन अक्सर मौलवियों और दीगर उलमा की सोहबत में रहता था। कुर्आन उसे अच्छी तरह याद था। और दीगर मज़ाहिब का भी कुछ इल्म उसने हासिल कर लिया था। फ़ारसी और अरबी की तरफ़ उस की तबइयत का रुज़ान हुआ और थोड़े ही अर्से में खासी लियाक़त (काबिलियत) इन उलूम में हासिल करली। अब तो वो तिफ़ल (छोटा बच्चा, लड़का) मक़तब (दर्सगाह) ना रहा। जो चंद एक साल गुज़रे थे। बड़े-बड़े लायक़ और मोअतबर (काबिल-ए-इज़ज़त) लोगों में उस का शुमार होने लगा और सब लोग मौलवी साहब कह कर पुकारने लगे। इस का बूढ़ा बाप भी उस की इस क़द्र शोहरत सुनकर दिल ही दिल में खुश होता था और अपनी सारी उम्मीदों का मर्कज़ उसी को समझता था।

मुहम्मद हुसैन अक्सर उन लोगों का अगुवा हुआ करता था, जो मसीही जमाअतों के मुखालिफ़ थे कभी-कभी मौक़ा पाके ये लोग बेचारे मसीही मुनादों को ज़िद व कूब (मारपीट) करते और अक्सर उनके काम में ख़लल (खराबी, तंगी या परेशानी) डाला करते थे। वो मुदल्लल गुफ़्तगु (ऐसी गुफ़्तगु जो दलाईल पर मबनी हो) करने में बड़ा होशियार था और लोग अपने इस मौलवी पर बड़ा फ़ख़ करते थे। चुनान्चे जब कभी कोई मसीही उनको अपने काम में मशगूल मिलता तो वो दौड़ के मौलवी मुहम्मद हुसैन कर बुला लाते और इस से भिड़ा दिया करते थे। इस तरह गोया दो मेंदों की टक्करें होतीं और ये लोग तमाशा देखते थे। और जब किसी मुनाद से मुहम्मद हुसैन के सवालों का जवाब ना बन पड़ता तो ये सब ताली बजाते और हुहा (शोरो-गुल) मचाते थे। इस तरह ये काम कुछ अर्से तक होता रहा। पर एक दिन का ज़िक्र है, कि एक बड़े क़स्बे में बाज़ार में मुनादी हो रही थी। कई एक मसीही मुनाद वहां खड़े थे और एक कसीर (कस्रत वाली यानी तादाद में बहुत ज़्यादा) जमाअत सुनने वालों की वहां उनके सामने मौजूद थी। मुहम्मद हुसैन और उसके

साथी भी आ मौजूद हुए और मुनादी में गड़बड़ी डालनी शुरू की। जब ये मुनाद को बहुत ही दिक्क (एक बीमारी जो फेफड़ों के खराब होने से लग जाती है) करने लगे तो वो खामोश हो गया। मुहम्मद हुसैन के साथियों ने फ़ौरन ये तजवीज़ पेश की कि हम चाहते हैं कि आप सब मसीही साहिबान हमारे मौलवी साहब से बहस करें और अगर उनके सवालों का जवाब आपसे खातिर-ख्वाह ना बन पड़े। या बहस में हार जाएं तो आप सबको मुसलमान होना पड़ेगा। मुनादों ने ये देख के कहा इन से किसी तरह पीछा ना छुटेगा। कहा कि अच्छा हम आपके मौलवी से बहस करने को तैयार हैं। पर चूँकि अब शाम हुई और वक़्त नहीं हम कल चार बजे शाम को यहां हाज़िर होंगे। आपको जो जो सवाल करने हैं लिख लाएं। इस पर मुहम्मद हुसैन और उस के साथी कहकरहे मारते हुए इस शाम को घर गए और दूसरे रोज़ वक़्त मुकर्ररा पर बाज़ार के बड़े चबूतरे (मुरब्बा या मुस्ततील बनाई हुई ऊंची जगह जहां पर लोग बैठते हैं) पर हाज़िर हुए एक कसीर जमाअत इस मुबाहिसे को सुनने के लिए वहां मौजूद थी। एक तरफ़ बाइबल रखी हुई थी दूसरी तरफ़ कुर्आन। एक तरफ़ मुहम्मद हुसैन और उसके साथी बैठे और दूसरी तरफ़ मसीही मुनाद। अब तक ऐसे भारी मुबाहिसे में कभी मुहम्मद हुसैन शरीक ना हुआ था। पर तो भी उसे और उस के साथियों को कामिल (मुकम्मल) उम्मीद थी कि मौलवी मुहम्मद हुसैन ही जीतेंगे और तब हम इन मसीहियों का ख़ूब ही तम्सखर (मज़ाक उड़ाना) करेंगे। इंतिज़ाम माकूल मुनासिब किया गया। कितने सिपाही पुलिस के भी वहां हाज़िर थे।

रोज़ अक्वल की बहस

ठीक चार बजे शाम को यूँ बहस शुरू हुई :-

मुनाद : जनाब मौलवी साहब आप जानते हैं कि !

मज़हबी बातों पर गुफ्तगु करना कोई हल्की बात नहीं। लिहाज़ा मैं शुरू करने से पहले चंद एक बातें पेश करता हूँ जिन पर अमल करना लाज़िमी होगा।

मौलवी : फ़रमाईये

मुनाद : अक्वलन तो आपसे मेरी अर्ज़ ये है कि जो कुछ आपको मसीही मज़हब की बाबत दर्याफ़्त करना है। वो इस गर्ज़ से ना हो कि आप मसीही मुनादों की लियाक़त (काबिलियत) जांचें मैंने देखा है, कि कितने लोग मसीहियों को ख़्वाह-मख़्वाह बिना किसी वजह के इस गर्ज़ से छेड़ते हैं कि अगर उनसे ठीक जवाब ना बन पड़े, तो लोगों के सामने उनकी हंसी हो।

मुनाद की इस बात ने मौलवी और उनके साथियों की दिली हालत को आश्कारा (साफ़, वाज़ेह) कर दिया। क्योंकि उनकी गर्ज़ बहस मुबाहिसा से हमेशा यही हुआ करती थी, कि मसीही मुनादों की हंसी हो लेकिन कम अज़ कम मौलवी के दिल में तो ये बात चुभ गई। और उसने ग़ौर कर के कहा कि :-

मौलवी : ख़ुदा ना करे कि ऐसा ख़याल मेरे दिल में आए।

मुनाद : दुवम मैं आपसे ये अर्ज़ करता हूँ, कि आप सच-मुच रास्ती (सच्चाई) के मुतहक्किक़ (तहक्कीक़ करने वाला, किसी चीज़ का सही और दुरुस्त करने वाला) हो के हमसे सवाल कीजिए। और किसी तरह के तास्सुब (फ़र्क़) को अपने पास ना भटकने दीजिए।

मुनाद का ये दूसरा तीर भी मौलवी के गहरा लगा क्योंकि तास्सुब तो उस की रग-रग में कूट के भर दिया गया था। शुरू ही से वो मसीही मज़हब की तरफ़ से मुतअस्सिब (तास्सुब यानी फ़र्क़ करने वाला, मज़हब या क़ौम की पिच करने वाला) था। ख़ुदा के रूह ने उस के दिल में ऐसा काम किया, कि उसे मालूम होने लगा, कि मुनाद गोया उस के दिल की सारी हक्कीक़त से वाक्किफ़ है। बातचीत करने से पहले उसे इन दो शर्तों पर बड़ा ग़ौर करना पड़ा। बार-बार उस के दिल में ये ख़याल आया कि क्या इंजीली बातें सच्य हैं। और क्या मैं अब तक ग़फलत (भूल चुक, ग़लती) में रहा। उसने उसी वक़्त फ़ैसला किया कि मैं ख़ुदा को हाज़िर व नाज़िर जान के साफ़ दिली से इन लोगों से बातचीत करूंगा। सो उसने ज़रा ठहर के बग़ौर कहा :-

मौलवी : हाँ आपका कहना ठीक है। मैं दरअसल सच्चाई की तहकीक में हूँ। इलावा अर्ज़ी हम और आप तो एक ही हैं। हम भी हज़रत ईसा को एक बड़ा नबी मानते हैं। सिर्फ़ फ़र्क है तो ये कि चंद मसाइल आपके मज़हब में ऐसे हैं जो कि हमारी समझ में नहीं आते और कुर्आन शरीफ़ उनकी ताईद करता।

मुनाद : जी नहीं। फ़कत यही नहीं। पर आपके मज़हब में और हमारे मज़हब में बड़ा भारी इख़्तिलाफ़ राह-ए-नजात में है।

मौलवी : फ़रमाईये वो क्या है।

मुनाद : देखिए आप मुहम्मद साहब को नबी मान के कहते हैं, कि सिर्फ़ उन्ही के ज़रीये से नजात हासिल हो सकती है। मेहरबानी कर के कुर्आन शरीफ़ की कोई आयत पढ़ें जिस में कि मुहम्मद साहब ने मुनज्जी होने का दावा किया हो।

मौलवी : याद नहीं फिर बताऊँगा। लेकिन हज़रत मुहम्मद साहब ﷺ के शाफ़ी (शिफ़ा देने वाला) होने में कोई शक नहीं है।

मुनाद : लेकिन हम मुहम्मद साहब को शाफ़ी तो क्या नबी भी नहीं मानते। वो तो मेरी और आपकी तरह इन्सान थे। शाफ़ी सिर्फ़ खुदावंद येसू मसीह ही है। और सिवाए उस के दुनिया में कोई ऐसा नाम नहीं कि जिसके ज़रीये से इन्सान गुनाह और गुनाह की सज़ा से मख़लिसी पा सके।

मौलवी : ये तो ज़मीन और आस्मान का फ़र्क है लेकिन हम कैसे जानें, कि कौन इनमें से सच्चा है आया हमारे हज़रत या आपके ईसा मसीह?

हम तो ये जानते हैं कि हमारा ही मज़हब सच्चा है। इस की ताअलीमात और मसाइल भी रास्त व दुरुस्त (सच्चे और सही) हैं। चुनान्चे जब हज़रत येसू इब्ने मर्यम आख़िरी वक़्त में आस्मान से उतरेंगे, तो उन सबको जो मुहम्मदी दीन के मुन्किर रहे हैं। वो मुसलमान करेंगे और तब मदीने में हज़रत येसू मसीह दफ़न किए जायेंगे। आख़िर में दीन-ए-मोहम्मद ही कायम रहेगा।

मुनाद : ये जानना कि कौनसा मज़हब सच्चा है और दुरुस्त। कोई मुश्किल बात नहीं इस की जांच हम आसानी से कर सकते हैं।

मौलवी : आप ज़रूर बताईए। हम ये जानना चाहते हैं।

मुनाद : जनाब मौलवी साहब आप जानते ही हैं, कि दुनिया में बहुत मज़हब और मज़हबी शाखें हैं और हर एक की तालीम और मसाइल जुदा-जुदा हैं। एक के उसूल दूसरे के खिलाफ़ हैं। हिंदू मज़हब राह-ए-नजात कुछ और ही बताता है आपका कुछ और है। और मेरा और ही है। और इन सबकी ताअलीमात मुख्तलिफ़ हैं।

मौलवी : जी हाँ मैं मानता हूँ, कि तरह तरह के मज़ाहिब इस दुनिया में हैं।

मुनाद : लेकिन अक्ल-ए-सलीम ये साफ़ गवाही देती है, कि ये सब के सब खुदा की तरफ़ से नहीं हो सकते। क्योंकि अगर उसी वाहिद खुदा की तरफ़ से होते तो फिर ये एक दूसरे की मुखालिफ़त क्यों करते हैं? सबकी तालीम एक ही सी होनी चाहिए क्योंकि एक ही खुदा है।

मौलवी : ये ठीक है। सच्चा मज़हब तो एक ही है। और वो मुहम्मदी मज़हब है। इसी के पैरों होना हर एक शख्स का फ़र्ज़ है। लिहाज़ा आप भी मुहम्मदी हो जाईए।

मौलवी मुहम्मद हुसैन की ये बात सुनके उनके साथियों और दीगर मुसलमानों ने जो उस वक़्त मौजूद थे। कहकहा मारा। और किसी ने भीड़ में से चिल्ला कर कहा “इन ईसाइयों को जल्द मुसलमान कर लो।”

मुनाद : (कहकहे का कुछ खयाल ना करके) अच्छा जनाब मौलवी साहब तो फिर मेरे और आपके बीच यही फ़ैसला बाक़ी रहा, कि आप राह रास्त पर हैं या नहीं।

मौलवी : जी हाँ। आप यही साबित कर के दिखाइए?

मुनाद : उस के शमुल में ये भी समझना चाहिए कि, अगर इस तमाम गुफ़्तगु व जुस्तजू के बाद मुझ पर या आप पर ये आशकारा (साफ़, वाज़ेह) हो जाये, कि दोनों में से

एक ग़लती पर है। तो उस का फ़र्ज ये होगा, कि फ़ौरन अपनी ग़लती को महसूस करके राह-ए-रास्त पर आ जाए। और अपनी इस बड़ी ग़लती को सब सामईन के सामने कुबूल करके इस की माफ़ी खुदावंद करीम से मांगे। कितने हैं जो अपनी ग़लती के काइल हैं। लेकिन फिर भी वो इसी में मुब्तला रहते हैं।

मौलवी : इस में क्या शक है जब अपनी ग़लती को मालूम किया तो इस में से निकलना ज़रूरी अम्र है। ये तो शर्त हम पहले ही आपसे लगा चुके हैं, कि जब हम आपको दीन इस्लाम का काइल कर देंगे तो आप सब साहिबान को कलमा पढ़ना पड़ेगा। देखिए हम आपको राह-ए-रास्त पर लाए।

इस के बाद मुसलमानों ने ख़ूब मन-माने कहकहे मारे। कोई कोई भीड़ में कहता हुआ सुनाई देता था, कि “जनाब मौलवी साहब हैं कि हंसी ठट्ठा मज़ाक़ है। उनके सामने इन ईसाइयों की क्या मजाल है।” करीब दो तीन मिनट तक भीड़ में ज़रा गड़बड़ी मची रही। और फिर गुफ़्तगु शुरू हुई। मुनादों ने मुसलमानों की बात का कुछ खयाल ना किया। वो खामोश बैठे सुनते रहे। वो अपने दिल में कहते थे कि उन्हें थोड़ी देर इसी तरह खुश हो लेने दो। आखिर खुदावंद येसू मसीह के नाम को जलाल और बुजुर्गी होगी। वो ऊंचा किया जाएगा। और लोगों को अपनी तरफ़ खींचेगा।

मुनाद : अच्छा जनाब मौलवी साहब। अब मैं आपको सच्चे मज़हब की जांच बताता हूँ।

मौलवी : माफ़ कीजिए। पहले आप हमारे दो और सवालों को हल कर दीजिए तब हम आपकी इस बारे में सुनेगे, कि सच्चे मज़हब की जांच क्या है।

मुनाद : हम बखुशी आपके सवालों हल करने की कोशिश करेंगे। लेकिन चूँकि अब छः बजे चुके हैं। क्या ये मुनासिब ना होगा कि आज अब हम सब रुख़्सत हों। और कल फिर चार बजे शाम इसी मुक़ाम पर हाज़िर होंगे। आप अपने सवालों को लिख लाइए। और हम यके बाद दीगरे (एक के बाद दूसरा) उनको हल करने को कोशिश करेंगे। आप तमाम साहिबान कल फिर ज़रूर तशरीफ़ लाइए। आज की गुफ़्तगु निहायत दिलचस्प थी। और कल की गुफ़्तगु से हम सब ज़रूर महजूज़ (खुश व खुरम नसीब) होंगे।

मौलवी : अच्छा। हाँ। अब नमाज़ का वक़्त भी है। और हम और आप दोनों थक गए हैं। कल शाम चार बजे हम यहां फिर हाज़िर होंगे। आदाब अर्ज़।

मुनाद : तस्लीमात अर्ज़।

इन हाज़िरीन का शुमार दो तीन सौ से कम ना होगा। जब ये लोग जाने लगे तो कोई शोर मचाता, कोई ललकारता (ऊंची आवाज़ में पुकारना) कोई कहता था कि मौलवी साहब ने इन पादरियों से अच्छी बहस की। ये उनको ज़रूर हरा देंगे। एक आलिम शख्स हैं। उनके सामने कौन खड़ा रह सकता है। कोई कहता अजी जनाब ऐसे कितने ही ईसाइयों को वो चुप करा चुके हैं। जो हो सो हो आज की बातचीत बड़ी दिलचस्प थी। इंशा अल्लाह मौलवी साहब कल ऐसे सवाल पेश करेंगे, कि जिनमें से एक का भी जवाब ईसाइयों से ना बन पड़ेगा। हिंदूओं का खयाल ज़्यादातर ये था कि “मौलवी हार जाएगा। ये ईसाई बड़े होशियार हैं। ये कुर्आन से भी खूब वाकिफ़ हैं। कल ज़रूर आना। देखें कल क्या होता है।”

ऐसी ऐसी बातों और शोर व गुल के बीच मुनाद भी अपने मकान को गए। जहां पहुंच कर सबने मिलकर खुदा बाप का शुक्र अदा किया। और आने वाले दिन के लिए ताकत और फ़ज़ल मांगा। मुनाद तो ये भरोसा रखते हुए कि कल खुदा ज़रूर मदद कर के अपना जलाल और बुजुर्गी ज़ाहिर करेगा, सो रहे। लेकिन मौलवी के दिल में एक अजीब बेचैनी थी जिसको ना तो उसने अपने साथियों पर ज़ाहिर किया। और ना खुद ही उसे समझ सकता था। ये तो खुदा की रूह थी जो उसे बेचैन कर रही थी। खुदा ने उसे अपने काम के लिए चुन लिया था और वो उसे उस बड़ी तब्दीली के लिए तैयार कर रहा था। जो उस में वाक़ेअ होने वाली थी। मौलवी खाना वगैरह खा के ख़्वाबगाह को गया पर नींद ना आइ। उस की बीबी भी उस के चेहरे को देख के हैरान थी। रात को चापाई पर पड़े-पड़े बार-बार ये खयाल उस के दिल में आता था, कि क्या हो सकता है कि मसीही मज़हब ही सच्चा है। जिस की मैंने अब तक सख्त मुखालिफ़त की है। क्या वो आयत जो मिशन स्कूल का मास्टर बार-बार लइकों को सिखाता था सचच होगी कि “खुदा ने जहान को ऐसा प्यार किया, कि अपना इकलौता बेटा बख़्शा कि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक ना हो बल्कि हमेशा की ज़िंदगी पाए?” लेकिन खुदा का बेटा होना कहाँ मुम्किन है। ये बात तो मैं मान नहीं सकता। ज़रूर कुछ तो रद्दो-बदल ईसाइयों ने इस में की है।

ऐसे ऐसे खयालों में मुहम्मद हुसैन ने रात काटी। दिन-भर भी यही बातें उस के दिमाग में गूँजती रहीं। अब चार बजे का वक़्त नज़दीक आया है और हम रोज़ दुवम की बहस को सुनेगे।

रोज़ दुवम

वक़्त-ए-मुईन (मुकर्ररा वक़्त) पर मौलवी हुसैन और उस के साथी चबूतरे (मुरब्बा या मुस्ततील बनाई हुई ऊंची जगह जहां पर लोग बैठते हैं) पर एक तरफ़ आ बैठे। और मसीही मुनाद भी अपने वाअदे के मुताबिक़ हाज़िर हो गए। आज तवक्कुल से भी ज़्यादा भीड़ चबूतरे (मुरब्बा या मुस्ततील बनाई हुई ऊंची जगह जहां पर लोग बैठते हैं) के आस-पास मौजूद थी। जिसमें हिंदू मुसलमान सब ही ज़ात के लोग थे। लोगों में एक बेचैनी सी मालूम होती थी। वो बेचैनी से राह देख रहे थे कि देखें आज मौलवी साहब क्या-क्या सवाल करते हैं और देखें इन पादरियों से कैसे-कैसे जवाब बन पढ़ें। ठीक चार बजे मसीही मुनादों में से फ़ज़ल मसीह उठ के खड़ा हुआ। क्योंकि आज उस ही की बारी थी, कि मुहम्मद हुसैन से सवाल व जवाब करे। फ़ज़ल मसीह के वालिद सफ़दर अली एक आलिम मौलवी थे। करीब आधी उम्र में उन्होंने मसीही मज़हब की सदाक़त को देखा। और मुहम्मदी दीन को छोड़ के मसीह के पैरों हो गए। फ़ज़ल मसीह का मुसलमानी नाम फ़ज़ल अल्लाह था। लेकिन बपतिस्मे के वक़्त फ़ज़ल मसीह रखा गया। वो इस वक़्त करीब सोला बरस का था। और कुर्आन को खत्म कर चुका था। अरबी, फ़ारसी का इल्म भी अच्छा खासा हासिल कर लिया था। और अंग्रेज़ी भी कुछ सीख ली थी। मसीही होने पर ये एक मिशन स्कूल में भेजा गया और कुछ अर्से वहां तालीम पाके मदरिसा इल्म इलाहिया का कोर्स खत्म किया। अब वो एक लायक़ मुनाद बन गया था। और मौलवी मुहम्मद हुसैन के मुक़ाबिल में खम ठोक के उस ज़बरदस्त पहलवान की मानिंद जो अखाड़े (वो जगह जो कसत करने या कुश्ती करने के लिए हो) में रंग दिखाने को तैयार हो। खड़ा हो गया और बोला।

फ़ज़ल मसीह : अच्छा जनाब मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब। अब वक्त है कि हम आपके सवालों को सुनें। आपका पहला सवाल क्या है?

मौलवी : आप मेहरबानी से ये बताईये के आप लोग हज़रत ईसा को खुदा का बेटा क्यों कहते हैं? क्या खुदा भी बीवी और औलाद रखता है?

इस पर कितने लोग ज़रा मुस्कराए और मुनादों की तरफ़ देखने लगे। गोया कहते थे कि देखें क्या जवाब देते हो।

फ़ज़ल मसीह : खुदा का बेटा एक मुहावरा है। इब्रानी लोग किसी शख्स को उस सिफ़त का बेटा कहते थे, जो उस की ज़िंदगी में खासतौर पर नुमायां होती थी। अला हाज़ा-उल-क़यास यहूदा हलाकत का बेटा कहलाता है। क्योंकि वो हलाकत से भरपूर था। बर्नबास तसल्ली का बेटा कहलाता है क्योंकि तसल्ली की सिफ़त उस में नुमायां थी। शेख़ सादी साहब मुसाफ़िर को राह का बेटा कहते हैं। लिहाज़ा मसीह खुदा का बेटा इसलिए कहलाता था कि उलूहियत उसकी ज़िंदगी में खासतौर पर नुमायां थी। यानी मसीह इस सिफ़त का बेटा या खुदा का बेटा हुआ। इसी तरह मसीह सलामती का शहज़ादा भी कहलाता है। इसी मुहावरे के मुताबिक़ दो भाई याक़ूब और यूहन्ना इब्ने रअद कहलाए। इलावा अज़ी आप इन्जील को बरहक़ मानते हैं कि नहीं?

मौलवी : हाँ ! फ़रमाईये।

फ़ज़ल मसीह : तो जब इन्जील ही में ये लिखा है कि मसीह खुदा का बेटा है। तो इन्सान कौन कि चूँ व चरा (एतराज़) करे?

मौलवी : जी हाँ ये तो दुरुस्त है लेकिन इन्जील की बाबत भी तो एतराज़ है।

फ़ज़ल मसीह : वो क्या?

मौलवी : हम लोग असली इन्जील को बरहक़ मानते हैं। बेशक़ लेकिन ये इन्जील जो आजकल राइज है। नक़ली है और इसलिए हमको इस की शहादत से दिलजमई (तसल्ली, इत्मीनान) नहीं हो सकती।

फ़ज़ल मसीह : बेशक नक़ली तो है। ये कब मुम्किन है कि ये वही जिल्द हो जो उस के कातिबों (लिखने वाले) ने लिखी। वो तो सिर्फ एक ही जिल्द होगी। बल्कि सच्य तो ये है कि मुजल्लद जिल्द भी ना थी। अलग-अलग जुज़ (हिस्से) थे और बाद को एक जिल्द में की गई। और अब इस की करोड़ों, अरबों, खरबों जिल्दें छिप गई हैं। पहले ये किताबें यूनानी ज़बान में थीं। अब सैंकड़ों ज़बानों में इस के तर्जुमे हो गए हैं। और होते जाते हैं। इसी तरह आपका कुर्आन शरीफ भी तो नक़ली है। कुर्आन की बाबत आप लोग कहते हैं कि वो शुरू ही से आस्मान में तख्ती पर लिखा हुआ था। और वक़तन-फ़-वक़तन खुदा ने जिब्राईल फ़रिश्ते के ज़रीये एक एक जुज़ कर के मुहम्मद साहब पर नाज़िल किया। इस के मुताबिक असली कुर्आन तो खुदा के तख्त पर रहा। और ये जो आप लोगों के पास है। उस की नक़ल है। फिर छापे खानों में बाइबल की तरह इस की भी नक़लें होती रहती हैं।

मौलवी : नक़ली से मेरा मतलब ये है कि जो इन्जील हज़रत ईसा पर नाज़िल हुई थी वो ये नहीं है। जो आप लोगों के पास है। आप लोगों ने इस में रद्द बदल (तब्दीली) कर डाली। और अपने मतलब की बातें दर्ज कर लीं। लिहाज़ा जो इन्जील अब आपके पास है वो तहरीफ़ शूदा तब्दील शूदा है। ये बात आम तौर से हम लोग जानते हैं और एक ज़माने से चली आई है। ऐसी इन्जील की शहादत गवाही को, आप ही कहे कि हम क्योंकर मान सकते हैं।

हमें आप लोगों पर निहायत ही अफ़सोस मालूम होता है कि अब आप लोग के पास कोई किताब नहीं है, कि जिसको हम इलाही कह सकें। आप लोग भी साहिबे किताब थे लेकिन सब कुछ आप ही बिगाड़ बैठे।

इलावा इस के एक और बात भी राइज है कि जो इन्जील हज़रत ईसा पर नाज़िल हुई थी वो तो उन्ही के साथ आस्मान को चली गई। अब इन्जील है कहाँ आपके पास जो है सो सब बनावटी बात है। ये दोनों एतराज़ माकूल हैं जो हमने किये हैं। क्या तमाम दुनिया के मुसलमान करते हैं और ज़रूर दोनों में से एक तो ठीक होगा। या तो ये कि इन्जील आपके पास है ही नहीं क्योंकि वो तो हज़रत ईसा के साथ ही गई। या ये कि जो है सो तहरीफ़ शूदा और बे-एतिबार है। लिहाज़ा इस किताब से हवाले देना फ़ुज़ूल है। इस को मानेगा कौन?

फ़ज़ल मसीह : आपके दो एतराज़ हैं :-

अव्वल : तो हम इस का फ़ैसला करेंगे कि इन्जील खुदावंद येसू के साथ गई या कि यहां है।

दोइम : ये कि अगर है तो क्या इसका तहरीफ़ (तब्दील) किया जाना मुम्किननात में से हो सकता है।

आपके पहले एतराज़ के जवाब में से बहुत सी बातों में से मैं इस वक़्त चंद एक पेश करता हूँ। साहिबान सुनिए। मौलवी साहब कहते हैं कि इन्जील यहां है ही नहीं क्योंकि वो येसू मसीह के साथ आस्मान को चली गई। कुर्आन या हदीस में ये बात कहीं पाई नहीं जाती। ये सिर्फ़ मुसलमानों का कहना है जिसका कोई सबूत उनके पास नहीं है।

2. इन्जील की वो बातें जो येसू मसीह ने सिखाईं और अपनी ज़िंदगी में अमली तौर से ज़ाहिर कीं मसीह के आस्मान को जाने के वक़्त तक मुकम्मल तौर पर लिखी ना गई थीं फिर ये कैसे मुम्किन था कि येसू मसीह इन्जील को अपने साथ ले जाता। अगर यही बात हम कुर्आन की बाबत कहें। तो आप यही दलील पेश करेंगे कि वाह ये कैसी हंसी की बात है। मुहम्मद साहब की मौत तक कुर्आन तो जमा किया ही ना गया था। उसे मुहम्मद साहब अपने साथ कैसे ले गए।

3. हमें ये सुनके खुशी है कि मुसलमान कहते हैं कि इन्जील मसीह पर नाज़िल हुई और कुर्आन कहता है कि इन्जील खुदा ने इन्सान की रोशनी और रहनुमाई के लिए दी। (देखिए सूरह 5 अल-मायदा 50 और 3 आले-इमरान 2) अब आप ही खयाल फ़रमाईये कि जब इन्जील इन्सान की रोशनी और रहनुमाई के लिए दी गई। तो खुदा जो आलम-उल-गायब (गैब का इल्म रखने वाला) है जानता है कि इन्सान तो ज़मीन पर हैं ना कि फ़िर्दौस में। लिहाज़ा हो नहीं सकता कि वो इन्जील को जो इन्सान के लिए है आस्मान पर भेज दे।

4. सब जानते हैं कि मुहम्मद साहब येसू मसीह से 600 बरस बाद आए और उन्होंने बार-बार इन्जील की बातों का बयान किया। और इन्जील के मानने वालों को अहले

किताब कहा जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि इन्जील उस वक़्त यानी 600 ई. में मौजूद थी। अब हम आपके दूसरे एतराज़ की तरफ़ रुजू होते हैं, कि क्या इन्जील तहरीफ़ हो गई है।

देखिए जनाब मौलवी साहब ख़ुदा की किताब में रद्दो-बदल करना कोई हल्की बात नहीं। ये तो आप जानते ही हैं कि ये बड़ा भारी गुनाह है और इस की सज़ा बहुत भारी है।

मौलवी : बेशक। ये बहुत भारी बात और कबीराह गुनाह है जिसमें आप लोग पड़ गए हैं। (मुसलमान ये सुनके ख़ूब हँसे)

फ़ज़ल मसीह : इलावा अर्ज़ी ये भी लाज़िमी बात है कि जब ये जुर्म इतना भारी है तो किसी के ऊपर इस को कायम करने के लिए सबूत भी बड़ा पुख़्ता होना चाहिए।

मौलवी : इस में क्या शक़ है। चारों तरफ़ सबूत ही सबूत मौजूद है।

फ़ज़ल मसीह : एक बात और भी बताइए कि ज़्यादातर मसीही लोग रास्त-गो। ख़ुदा-परस्त और ख़ुदातरस हैं कि नहीं।

मौलवी : हाँ ये बात तो मानी हुई है।

फ़ज़ल मसीह : तो फिर आप देखिए कि इतना भारी जुर्म आप ऐसे इज़्जतदार लोगों पर लगाते हैं। अब इस को कायम करने के लिए बड़ा ही ज़बरदस्त नबुव्वत आपको पेश करना है। अब आप साबित कीजिए। अगर ये नक़ली है तो क्या आपके पास असली है जिससे आप इस का मुकाबला कर के कहते हैं।

मौलवी : क्या ये मुम्किन है कि सब मुसलमान ग़लती पर हों? सबूत यही है कि सब मुसलमान ये कहते हैं ये बात कोई हमने अपने दिल से तो बना ही नहीं ली। मुद्दतों से ये रिवायत चली आई है।

इलावा इस के एक बड़ा सबूत ये है कि बहुत सी बातें जो उस असली इन्जील में मुहम्मद ﷺ और कुर्आन शरीफ़ की बाबत थीं उनको आप लोगों ने उस में से निकाल डाला। क्योंकि इस इन्जील में हम उन्हें नहीं पाते।

फ़ज़ल मसीह : ये कहना कि सब मुसलमान ग़लती पर हो सकते हैं कोई दलील नहीं इलावा अज़ीं ये कहना दुरुस्त भी नहीं है क्योंकि सब मुसलमानों का कहना ये नहीं है। कदीम मुसलमान मुफ़स्सिरों में बहुत ऐसे हुए हैं जिनकी ये राय थी कि इन्जील तहरीफ़ नहीं हुई है। मसलन इमाम मुहम्मद इस्माईल बुखारी, इमाम फ़ख़्र उद्दीन राज़ी, शाह वली-उल्लाह वग़ैरह और आजकल भी हिन्दुस्तान के ज़ी इल्म मुसलमान यही कहते हैं कि इन्जील मुहर्रिफ़ (तहरीफ़ करने वाला, बदलने वाला) नहीं। लेकिन अगर सब मुसलमान इन्जील के खिलाफ़ इस मुआमले में एक राय भी होते। तो उनका महज़ ऐसा होना कोई दलील नहीं हो सकता था। और आज तक किसी ने कोई सबूत दिया नहीं है।

मौलवी : क्या और कोई दलील आपके पास नहीं है? इस से हमें तसल्ली नहीं।

फ़ज़ल मसीह : हम बहुत दलीलें पेश कर सकते हैं, कि भला यहूदियों और मसीहियों का इन्जील में तब्दीली करने से क्या मक़सद हो सकता था? मुकाशफ़ात की किताब के 22 बाब की 18, 19 आयत में एक सख़्त सज़ा इस की बाबत लिखी है। भला ख्वाह-मख्वाह कौन अपने ऊपर भारी सज़ा को दीदा व दानिस्ता (जान-बूझ कर) लेगा?

मौलवी : हम पहले ही कह चुके हैं कि ऐसा करने में उनका मक़सद ये था कि हज़रत मुहम्मद ﷺ की बाबत जितनी नबुव्वतें उस में थीं उन्हें निकाल डालें ऐसा ही उन्होंने किया।

फ़ज़ल मसीह : ये क्यों? ऐसा करने से उन्हें क्या पाने की उम्मीद थी। अगर मुहम्मद साहब की बाबत नबुव्वतें बाइबल में थीं। तो उन्होंने उसे कुबूल क्यों नहीं किया?

मुसलमान हो जाने से तो उन्हें फ़ायदा होता। क्योंकि जब मुसलमानों ने सीरिया, फ़ारस, फ़िलिस्तीन, मिस्र और दीगर मुल्कों को फ़तह किया तो लूट का हिस्सा उन्हें भी मिलता। सचच तो ये है कि इन नबुव्वतों को बाइबल में शरीक करना मुम्किन तो था पर निकालना नहीं। मुसलमान होने से वे इन तमाम मुसीबतों से बचते। जो उन पर मुहम्मद साहब और उनकी उम्मत के हाथ से आईं।

इलावा बर्रीं यहूदी और मसीही मुहम्मद साहब के वक़्त में या बाद को बाइबल में कुछ रद्दो बदल नहीं कर सकते थे। क्योंकि उस वक़्त तो बाइबल की जिल्दें दूर-दूर फैल

गई थीं। और उस वक़्त यहूदी और मसीही भी यूरोप हिन्दुस्तान, फ़ारस, मीसोपातामियाह, आरमीनिया, एशयाए कोचक, सीरिया फ़िलिस्तीन, अरब, हब्श, मिस्र, अफ़्रीका वगैरह में फैल गए थे। लिहाज़ा क्यौंकर मुम्किन हो सकता था, कि वो सब के सब जमा हो के बाइबल की सब जिल्दों में तब्दीली करें और इस बारे में मुत्फ़िक़-उल-राए होएं और अगर वो बगैर इत्तिफ़ाक़ राय के ऐसा करते तो दूसरे फ़ौरन उनकी साज़िश को फ़ाश कर देते।

हम दलील पर दलील इस बारे में दे सकते हैं। देखिए आजकल जो सबसे क़दीम बाइबल की जिल्दें हैं वो चार हैं और लंदन सेंट पीटर बर्ग, रुम और पैरिस में पाई जाती हैं। ये मुहम्मद साहब से करीब 2,3 सौ साल क़ब्ल की हैं। ये चारों एक दूसरे से मिलती हैं। और इनका मुकाबला दूसरी नक़लों और तर्जुमों से किया गया है। और कोई खास फ़र्क़ नहीं है। और कितनी दलीलें हैं जिन सबसे यही साबित होता है कि इन्जील नक़ली नहीं। पर बिला तहरीफ़ असली है।

मौलवी : ख़ैर ये बात तो अब यहां तक हुई। सभों ने हमारी और आपकी बातों को सुना। वो खुद फ़ैसला कर सकते हैं और जो बात है सो सब के सामने ज़ाहिर ही है। अब रुख़्सत होने का वक़्त आया। अभी कई एक सवाल हमें और करने हैं। सो कल हम यहीं चार बजे शाम को ज़रूर होंगे।

फ़ज़ल मसीह : ठीक है। हम कल फिर आएंगे। आप सब साहिबान भी तशरीफ़ लाइए और अपने दोस्तों को हमराह लेते आईए। आदाब अज़।

मौलवी : तस्लीम :

रोज़ दुवम की बातें सुन के मौलवी अपने दिल ही दिल में क़ाइल और परेशान अपने घर को गया। और मुसलमान को छोड़ अक्सर लोगों का यही फ़ैसला था कि वाह, पादरियों ने अच्छे दंदाँ तोड़ जवाब मौलवी को दीए। देखिए कल क्या होगा। ये मसीही बड़े ज़बरदस्त हैं।

मुनाद भी ख़ुदा का शुक्र करते हुए घर गए। इस रात को घर-घर इस मौलवी और उस के साथियों के लिए दुआ की गई। अब हम कल रोज़ सोइम की बहार देखेंगे।

रोज़ सोड़म

तीसरे रोज़ हस्बे-मामूल तरफ़ेन। एक तरफ़ मौलवी मुहम्मद हुसैन और दूसरी तरफ़ मसीही मुनाद उसी चबूतरे (मुरब्बा या मुस्ततील बनाई हुई ऊंची जगह जहां पर लोग बैठते हैं) पर ठीक चार बजे फ़राहम हुए। इस मुबाहिसे की शौहरत तमाम शहर में फैल गई थी। और लोगों के झुण्ड के झुण्ड चारों अतराफ़ से आ रहे थे। मसीही मुनादों का दिल उस के दिल को देख देख के उमंग मार रहा था। खासकर के पादरी प्रेम मसीह का। क्योंकि आज के दिन खुदावंद येसू मसीह की अज़मत व जलाल ज़ाहिर करने का बीड़ा उन्होंने उठाया था। हम थोड़ी देर के लिए नाज़रीन के सामने आज के मुबाहिस की ज़िंदगी का मुख्तसर अहवाल पेश करेंगे। प्रेम मसीह के वालिद जवाहर लाल एक शरीफ़ हिंदू घराने से थे। जवाहर लाल और उनकी बीबी दोनों हिंदू दूस्तूरों को बड़ी जाँ-फ़िशानी (जान देना) से मानते थे। खाने कपड़े से आसूदा हाल (खुश-हाल) थे। किसी बात की कमी ना थी। लेकिन एक ही बात का रोना था, कि घर में कोई चिराग़ ना था कि जिससे उनका घर रोशन होता और ज़िंदगी में खुशी और उम्मीद होती। बहुत दिन तक किसी लाल के पैदा होने का इंतज़ार रहा लेकिन जब आधी एक उम्र गुज़र गई। तो दोनों मायूस हो गए। एक दिन बैठे उनके जी में आया कि अब इस तरह ज़िंदगी बसर करने से क्या फ़ायदा आओ जीते-जी तीर्थों के दर्शन तो कर लें। शायद इसी तरह हमें कोई बच्चा मिले। ये जी में ठान के उन्होंने अपना सब सामान मकान वगैरह बेच डाला और गैरवां (लाल रंग का) कपड़ा पहन के दोनों साधू सा धनी बन के तीर्थ यात्रा को निकल पड़े। बदरी नाथ, केदारनाथ, पुश्कर, प्रयाग वगैरह सब तीर्थों का पांव पैदल सफ़र किया। कभी कभी निहायत दुख उठाना पड़ा। चलते-चलते पैरों में छाले पड़ गए। सेहत ख़राब हो गई और जब सब तीर्थ कर चुके। तो एक पैसा भी गाँठ में ना रहा। इन सब तीर्थों में उन्होंने बड़ी-बड़ी मिन्नतें मानीं जिनका मतलब यही था कि किसी तरह हमारे औलाद हो कई बरस इसी तरह भटकते फ़िरे। लेकिन कुछ उम्मीद ना हुई। ख़ैर आख़िर को लाचार थे मांदे, बे पैसा कोड़ी, अपने शहर को वापिस लौटे। और बड़े गरीबाना तौर से गुज़र करने लगे। इस के पाँच बरस बाद ऐसा हुआ, कि एक दिन जवाहर लाल ने बाज़ार में एक मसीही कुतुबफ़रोश (किताबें बेचने वाले) से दो पैसे में एक

धर्म तुलमा खरीदी, जिसको कई रोज तक बगौर पढ़ा। इस का नतीजा ये हुआ कि उस के ना-उम्मीद रंजीदा, दिल में रोशनी की एक किरण चमकी जिसने उसके के दिल को उम्मीद और खुशी से भर दिया। उसने अपनी बीबी को मसीही मज़हब की बाबत बताया और धरम तिला पढ़ कर सुनाई और दोनों के दिल में ये बात जम गई, कि मसीही मज़हब ही से हमें राहत व आराम हासिल होगा। वो एक पादरी के पास गए और थोड़े दिनों में और तालीम पाके मसीही हो गए। हुस्न-ए-इतिफ़ाक से ऐसा हुआ कि इसी साल जवाहर लाल की बीबी को उम्मीद हुई। और वक़्त पर एक ख़ूबसूरत लाल पैदा हुआ। जिसका नाम प्रेम मसीह रखा गया। जूँ-जूँ प्रेम मसीह बड़ा होता था। जवाहर लाल और उस की बीबी का दिल फूले ना समाता था। उनकी ज़िंदगी उम्मीद और खुशी से भर गई थी। और उनका एतिक़ाद यही था कि मसीही मज़हब की ये बख़्शिश है। प्रेम मसीह एक मेहनती और होशियार लड़का बना और अपने बहन भाईयों से बड़ी उल्फ़त से पेश आता था। क्योंकि जवाहर लाल के घर अब चार बच्चे दस साल के अंदर हो गए थे। घराना बड़ा था और ग़रीब थे। तो भी ज़िंदगी बड़ी खुशी से बसर करते थे। प्रेम मसीह रोज़ रोज़ स्कूल को जाता था और पढ़ने लिखने में बड़ी मेहनत करता था। पंद्रह बरस की उम्र में उसने मिडल पास किया। लेकिन चूँकि उस के माँ बाप ग़रीब थे। उसे स्कूल छोड़ के नौकरी करनी पड़ी। ये दिन-भर काम करता और रात को पढ़ा करता था। लेकिन बेचारे की इतनी आमदनी ना थी, कि एक अच्छा लैम्प जला के पड़ सकता। सो वो अपनी बग़ल में किताबें दबा के सड़क पर चौराहे की सरकारी गैस बत्ती के नीचे जा खड़ा होता था और कई घंटे वहां खड़ा खड़ा पढ़ता रहता था। ऐसी सख़्त मेहनत कर के प्रेम मसीह बहुत होशियार हो गया। पादरी साहब ने उसे होशियार, मेहनती और होनहार देख के मदरिसा इल्म इलाही में भेज दिया। और वहां का कोर्स खत्म कर के एक ज़बरदस्त मुनाद बन गया। आज हम इस शख़्स की तक़रीर को सुनेगे।

प्रेम मसीह : अच्छा कहीए जनाब मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब आज आपका सवाल क्या है?

सब हाज़िरीन ख़ामोशी से कान लगा कर सुनें।

मौलवी : कल हमारा सवाल इन्जील की तहरीफ़ के बारे में था। ख़ैर अब हम इसकी बाबत और कुछ ना कहेंगे। जो है सो है। लेकिन अब सवाल ये है कि आप जो बार-बार इन्जील से हवाले पेश करते हैं। इस से क्या फ़ायदा क्योंकि इन्जील तो मन्सूख़ (खत्म)

हो चुकी है? शुरु में तौरत की पाँच किताबें हज़रत मूसा पर नाज़िल हुईं और ये किताबें हज़रत दाऊद पर ज़बूर के नाज़िल होने से मन्सूख हो गईं और बाद को ज़बूर इन्जील के हज़रत ईसा पर नाज़िल होने से मन्सूख हुईं। इसी तरह इन्जील कुर्आन के नाज़िल होने से मन्सूख हो गईं। अब इस की शहादत बेसूद (बेफ़ाइदा) है। अब तो हमारे पास कुर्आन है। और इसी को मानना आपका फ़र्ज़ और हमारा फ़र्ज़ है।

प्रेम मसीह : साहिबान सुनिए मौलवी साहब का दावा आज ये है कि इन्जील मन्सूख (खत्म) हो गई है। क्या ये मुम्किन है? जनाब मौलवी साहब। क्या जो आप कहते हैं वो कुर्आन के मुताबिक है?

मौलवी : बेशक। कुर्आन इस का शाहिद (गवाह) है।

प्रेम मसीह : क्या आप कुर्आन में से एक भी आयत पेश कर सकते हैं, कि जिससे ये ज़ाहिर हो कि कुर्आन के आने से इन्जील मन्सूख हो गई है।

मौलवी : मुझे अफ़सोस है कि इस वक़्त कोई ऐसी आयत याद नहीं आती।

प्रेम मसीह : कुछ अजब नहीं। क्योंकि कोई ऐसी आयत है ही नहीं। कुर्आन में “नस्ख” हर्फ़ दो ही दफ़ाआ आया है। और दोनों मर्तबा इन्जील की बाबत नहीं लेकिन कुर्आन ही की आयत की निस्बत है। आपके उलमा की राय है, कि कुर्आन में 225 आयत मन्सूख की गई हैं। कुर्आन में कहीं ये शहादत नहीं मिलती कि इन्जील मन्सूख हो गई है। ये सिर्फ़ लोगों का ख़्याली पुलाव है।

मौलवी : जी नहीं जनाब ये ख़्याली पुलाव की बात नहीं है। अक्लन हम ये जानते हैं कि जिस तरह ज़बूर के नाज़िल होने से तौरात और इन्जील के नाज़िल होने से ज़बूर मन्सूख हो गए। इसी तरह कुर्आन के आने से इन्जील मन्सूख हो गई है। हर कोई इसे समझ सकता है। और ज़्यादा सबूत की क्या ज़रूरत है?

प्रेम मसीह : मेरे हुज़ूर तेरे लिए दूसरा ख़ुदा ना हो। तू बुत-परस्ती मत कर। क्या ये मन्सूख हो गए हैं?

मौलवी : नहीं।

प्रेम मसीह : तू खुदावंद अपने खुदा का नाम बेफ़ाइदा ना ले। तू सबत का दिन पाक रखने के लिए याद रख।। क्या ये मन्सूख हैं?

मौलवी : नहीं।

प्रेम मसीह : ये दस अहकाम में से चार हैं। इनके इलावा और भी हैं। मसलन तू अपने माँ बापकी इज्जत कर, खून मत कर वगैरह-वगैरह। क्या ये दस अहकाम मन्सूख हो गए हैं?

मौलवी : नहीं ये तो अल्लाह तआला के अहकाम हैं। ये कैसे मन्सूख हो सकते हैं?

प्रेम मसीह : अगर नहीं तो आप कैसे कह सकते हैं कि तौरैत मन्सूख हो गई है क्योंकि ये तो तौरात में ही हैं।

कुर्आन से साफ़ ज़ाहिर है, कि मुहम्मद साहब के वक़्त में तौरात, ज़बूर और इन्जील की शहादत मानी जाती थी। (देखिए सूरह 2 अल-बकरह, 130) मसीह ने साफ़ कहा कि “ये ना समझो कि मैं तौरैत या नबियों की किताबों को मन्सूख करने आया हूँ। मन्सूख करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूँ। (मत्ती 5:17) स्कूल को लड़का पढ़ने को जाता है। शुरू में वो पहली किताब शुरू करता है जब वो ख़त्म कर लेता है तो दूसरी किताब उस्ताद उसे देता है और यूँ जूँ-जूँ वो इल्म में तरक्की करता जाता है तब तब उसे बड़ी और गहरी किताबें मिलती जाती हैं। पर दूसरी किताब पहली को मन्सूख नहीं करती बल्कि दूसरी की बुनियाद उसी इल्म पर होती है जो लड़के ने पहली किताबों में हासिल किया था। इसी तरह खुदा ने लोगों को रफ़ता-रफ़ता आहिस्ता-आहिस्ता तौरात, ज़बूर, नबियों के सहीफ़ों और इन्जील के ज़रीये तालीम दी। इन्जील के बाद और कोई इल्हामी किताब इस किस्म की है नहीं। वो सब ज़मानों के लिए है और आज भी है।

मौलवी : हाँ पर एक बात और गौरतलब है। बहुत से अम्बिया हुए हैं। रसूल भी बहुत हैं हर एक नबी और रसूल अपने अपने वक़्त के लोगों की तालीम के लिए भेजा

गया। देखिए पहले हज़रत मूसा को अल्लाह तआला ने भेजा। उनके बाद हज़रत दाऊद आए। उनके बाद सुलेमान और सुलेमान के बाद याहया (यूहन्ना) बपतिस्मा देने वाला और फिर हज़रत ईसा और बाद में आखिरुज़्ज़मान (आखिरी नबी) हज़रत मुहम्मद ﷺ इस तरह से साफ़ ज़ाहिर है कि एक के बाद दूसरे को मन्सूख करता आया। अब सब जानते हैं कि हमारे नबी के बाद और कोई हुआ नहीं। लिहाज़ा वही आखिर-उल्ज़मान हैं और उन्हीं पर नबुव्वत खत्म है। वही सब नबियों पर गोया मुहर हैं। जब एक बादशाह गुज़र जाता है। तो दूसरा उस की जगह लेता है। और पहले का दौर दौरान जाता रहता है और दूसरे का आ जाता है। इसी तरह मुहम्मद ﷺ ही की बादशाहत है। उन्हीं को मानना और उन्हीं की ताज़ीम करना लाज़िम व वाज़िब है।

प्रेम मसीह : ये आपका कहना सही है कि जब एक बादशाह गुज़र जाता है। तो उस की जगह दूसरा गद्दी पर बैठता है। लिहाज़ा जो मर गया उस का दौर दौरा जाता रहता है। लेकिन शाही क़ानून बदल नहीं जाते क़वानीन वही रहते हैं जो गुज़रता बादशाह के वक़्त में थे। इलावा अज़ीं ये मिसाल सिर्फ़ दुनियावी बादशाहों और बादशाहतों के बारे में है। और जो आप साबित करना चाहते हैं। उस पर आइद नहीं होती। येसू मसीह कोई दुनियावी बादशाह बन के नहीं आया। वो सिर्फ़ इसलिए मुजस्सम हुआ, कि गुनेहगारों को उनके गुनाह से बरकत बख़्शे। इलावा अज़ीं वो मौत के ऊपर ग़ालिब हो के आस्मान पर चढ़ गया और अब भी अज़ली अबदी (अव्वल व आखिर) हो के ख़ुदा के दहने हाथ बैठा है। बल्कि आप लोगों का कहना तो ये है कि जब लोग येसू मसीह को पकड़ने आए तो अल्लाह तआला ने उसे तो आस्मान पर बुला लिया। और उस के दुश्मनों में से एक को उस की सूरत में बदल दिया। जिसे यहूदियों ने पकड़ के मार डाला। लिहाज़ा आपके अक़ीदे के मुवाफ़िक़ भी येसू मसीह ज़िंदा है। और फिर आने वाला है। तो जब कि वो ज़िंदा है तो कौन उस की बादशाहत पर तसर्रुफ़ (खर्च करना, दखल देना) कर सकता है? इलावा बरीं फ़र्ज़ किया कि येसू मसीह की रुहानी बादशाहत बक़ौल आपके मुहम्मद साहब को मिली तो ये बताईए कि मुहम्मद साहब की मौत के बाद कौन गद्दी पर बैठा?

फिर आप खुद कह चुके हैं कि आप मसीह को बरहक़ नबी मानते हैं। जब वो बरहक़ है तो उस की बातें कैसे टल सकती हैं? ये तो एक हकीक़त है और हकीक़त को कोई रद्दो-बदल नहीं कर सकता। दुनियावी क़वानीन की तर्मीम होती रहती है। लेकिन ख़ुदा के आईन कभी नहीं बदलते क्योंकि ख़ुदा खुद बदल नहीं सकता।

मौलवी : अच्छा खैर चलिए। ये बात यहां तक रही। अब बर्खास्त होने का वक़्त आ गया। कल अगर आप फिर इसी वक़्त हाज़िर हों तो हम कुछ और गुफ़्तगु करेंगे। कई एक सवाल अभी बाक़ी हैं।

प्रेम मसीह : बहुत बेहतर कल फिर सब साहिबान यहां तशरीफ़ लाइए। आदाब।

मौलवी : तस्लीम।

इस गुफ़्तगु के बाद रोज़ सोइम की बहस खत्म हुई। मसीहियों के ऐसे मुदल्लल (दलाईल) और सफ़ाई के जवाब सुनके लोगों में एक अजीब समां छाया हुआ था। इन तीन रोज़ की बातों ने लोगों के दिलों पर बहुत काम किया। बहुतों के दिल में और तलाश-ए-हक़ (सच्च की तलाश) की आरजू होने लगी। मुनादों ने सोचा कि कल मुबाहिसे के बाद इन्जील और हिस्सों की चंद जिल्दें लेते चलेगे। शायद कोई ख़रीद लेगा। मिशनरी साहब ने उनको चंद जिल्दें बाइबल और इन्जील की और चंद ट्रेक्ट वगैरह दे दीए और दुआ व ध्यान में मसरूफ़ हुए ताकि चौथे दिन के लिए तैयार हों। उनके पिछले तीन दिनों से उनकी बड़ी हौसला-अफ़ज़ाई हुई और कामिल यक़ीन हो गया कि हमारा खुदावंद येसू मसीह अपने वाअदे के मुताबिक़ हमेशा हमारे साथ है। जब हम उस का काम करते हैं तो वो हमारी रहबरी करता है। और मज़ीद जोश के साथ वहां की तमाम कलीसिया के लोग दुआ करने लगे। और ये अय्याम (दिन) तमाम कलीसिया के लिए बड़े ताज़गी बख़्श मालूम होते थे। अब अगर आप कल चार बजे शाम फिर बाज़ार की सैर करते हुए चबूतरे (मुरब्बा या मुस्ततील बनाई हुई ऊंची जगह जहां पर लोग बैठते हैं) के पास जा खड़े हों। तो चौथे रोज़ की बहादुर की बातों से निहायत महजूज़ (खुश व ख़ुरम, नसीब) होंगे। उसे मालूम है कि कल मुझे ही अखाड़े में मसीह को दिखाना है। वो बड़ी ग़ौर व फ़िक़र से खाने के बाद चिराग जलाए बैठा है। एक तरफ़ कुर्आन खुला रखा है और दूसरी तरफ़ बाइबल है और वो खास खास बातें चुन चुन के अपनी नोट बुक में दर्ज कर रहा है। कभी घुटनों परगे के दुआ में मदद मांगता कभी फिर बैठ के पढ़ता लिखता और यूँ कल की कुशती मारने के लिए ख़ूब तैयार है। उसे इत्मीनान है कि खुदावंद ज़रूर ऊंचा उठाया जाएगा। और उसके नाम को जलाल व बुजुर्गी इस खाक के पुतले से होगी। हमारा दिल भी कल की बातें सुनने को फड़क रहा है कल ज़रूर सुनेगे।

रोज़ चहारूम

मंगल के रोज़ ये बहस शुरू हुई थी। और आज जुमा है। एक कसीर जमाअत चबूतरे (मुरब्बा या मुस्ततील बनाई हुई ऊंची जगह जहां पर लोग बैठते हैं) पर साढ़े तीन बजे से ही हाज़िर हो गई थी। लोगों की कोशिश थी कि आगे जगह मिले। ताकि वो मसीही मुनादों की बातें आसानी से सुन सकें। और कोई भी लफ़्ज़ रायगां (ज़ाए) जाने ना पाए। पिछले तीन रोज़ की बातों ने लोगों के दिल में बड़ी दिलचस्पी पैदा कर दी थी। आज मदरसे में तअतील थी लिहाज़ा कई एक मसीही जवान उस्ताद व तलबा भी मौजूद हुए जिन्होंने लोगों को ब-तर्तीब बिठाया। शहर के कई एक शरिफा (शरीफ़) भी आज हाज़िर थे जिनके लिए हमारे जवान दौड़ के कुर्सियाँ और बेंचें ले आए। और यूँ बड़े आराम व सहूलत के साथ सब ब-तर्तीब बैठे। एक तरफ़ से मौलवी मुहम्मद हुसैन और उनके साथी आए। और दूसरी तरफ़ से ठीक चार बजे मसीही मुनाद भी वारिद हुए। सबकी आँखें मुनादों की तरफ़ लगी हुई थीं। कि देखें आज कौन बोलता है।

आज का तक़रीर करने वाला एक क़ौमी हैकल फ़ीलतन छः फुट ऊंचा जवान है जिसको मसीही जमाअत इब्ने रअद कहती थी। क्योंकि जैसा ये क़द व कामत में बेमिसाल था वैसे ही बोलने वाला भी था। इस को तक़रीर करने में ख़ुदादाद लियाक़त (काबिलियत) थी। उसने बहुत वक़्त कल और आज ग़ौर फ़िक़्र और दुआ में सर्फ़ किया था। और उस के चेहरे से आज इस दिलजमई का इज़हार हो रहा था। जो उसने अपने ख़ुदावंद की सोहबत में हासिल की थी। इस जवान की ज़िंदगी का मुख़्तसर अहवाल यूँ है, कि बलवंत सिंह एक मालदार राजपूत घराने में पैदा हुआ और अपने बाप और चचा के दर्मियान एक ही लड़का

था। चचा भी एक बड़ा ज़मीनदार था और इन दोनों भाईयों की उम्मीद बलवंत पर ही कायम थी। वो आठ बरस की उम्र में एक निहायत उम्दा स्कूल को भेजा गया और बीस बरस की उम्र तक उसे अच्छी खातिर-ख्वाह तालीम दी गई। राजपूत के इस खास स्कूल में और स्कूलों की मानिंद बाकायदा एफ. ए. बी. ए. वगैरह की ख्वांदगी ना थी। पर यहां उनको उर्दू, फ़ारसी, अरबी, हिन्दी और अंग्रेज़ी ज़बानें सिखाई जाती थीं। और हिसाब किताब, काश्तकारी, बंदूक, तलवार चलाना और रियासत के काम को चलाना। घोड़े पर चढ़ना वगैरह-वगैरह में माहिर करा देते थे। इन सब बातों को बलवंत ने ऐसा सीखा कि सब तरह से बलवंत था और देखने में गोया साँचे में ढला हुआ राजपूत था। जब बलवंत बीस बरस की उम्र में इस राजपूत स्कूल की सब तालीम हासिल कर के घर वापिस आया। तो बाप और चचा को बड़ी मसरत (खुशी) हासिल हुई। और उस की तालीम का ज़माना खत्म करने की यादगार में बड़ी-बड़ी खुशियाँ मनाई गईं। अब दूसरी बात ये होने को थी कि उस की शादी की तारीख़ मुकर्रर की जाये क्योंकि मंगनी तो पहले ही हो चुकी थी। बाप और चचा की उम्मीद थी कि शादी वगैरह से फ़ारिग हो के कुछ दिन में ज़मीन जायदाद सँभालने के लायक होगा और हम दोनों भाईयों को बुढ़ापे में बड़ा आराम मिलेगा। लेकिन एक और बात बलवंत की तालबालमी के ज़माने ही में उस के दिल पर नक़श हो चुकी थी। जो बलवंत के बाप और चचा की सब उम्मीदों को खाक में मिलाने का बाइस ठहरी। इसी राजपूत कॉलेज में एक और राजपूत जवान था जिसने अपनी इब्तिदाई तालीम एक विलायती मसीही खातून से पाई थी। जो उस की तर्बीयत के छुटपन () में रखी गई थी। ये खातून हकीकी मसीही थी और अदब कायदा अंग्रेज़ी वगैरह के साथ ही साथ उसने रघुबीर सिंह को मसीही तालीम देने में कोई दक़ीका (मामूली बात) बाकी ना छोड़ा था। रघुबीर यूँ इस लेडी की ज़ेर निगरानी 12 बरस की उम्र तक रहा और इस अर्से में बाइबल की खास बातें और खासकर राह-ए-नजात उस के ख़ूब ज़हन नशीन हो गई थीं। और ये बाइबल में यहां तक दिलचस्पी लेने लगा कि जब उसने कॉलेज को जाना शुरू किया तो उसने अपनी इसी लेडी गवर्नस (इतालीका) से अंग्रेज़ी में एक छोटी सी बाइबल मांग ली जिसको मौक़ा पा के पढ़ता था। रघुबीर और बलवंत दोनों पोलो खेल के बड़े शावक थे और यूँ वो दोनों आपस में गहरे दोस्त हो गए।

एक दिन का ज़िक्र है कि रघुबीर अकेला बैठा छुप के उसी बाइबल को पढ़ रहा था कि बलवंत भी घूमता फिरता इधर आ निकला। रघुबीर ने बलवंत की आहट पाके बाइबल को झट से जेब में रख लिया लेकिन बलवंत इस किताब को देख चुका था। और चूँकि

देखने में वो कुछ गौर-मामूली सी थी उस के दिल में फ़ौरन खयाल आया कि ये कोई भेद की किताब है जो रघुबीर छुप कर पढ़ता है। होना हो ये जादू की किताब है। सो वो रघुबीर के पास आके बैठ गया। दोनों दोस्त तो थे ही। फ़ौरन बोल उठा। “क्यों यार छुप छुप के जादू सीखते हो?”

रघुबीर : “कैसा जादू?”

बलवंत : “हाँ हमें चकमे देते हो। अभी वो छोटी सी क्या किताब पढ़ रहे थे। भला जेब तो दिखाओ।”

रघुबीर : “नहीं वो कोई जादू की किताब नहीं है। वो तो यूँही है।”

बलवंत ने जो देखा कि रघुबीर टाल मटोला करता है। उसे और भी शक हुआ और कुशतम कुशा (खींचा-तानी) करके रघुबीर की जेब से बाइबल निकाल ही ली। उसने कभी ना तो बाइबल पढ़ी थी ना देखी थी। हैरत में हो के पूछने लगा। “अच्छा दोस्त अब भेद तो खुल ही गया। बताओ ये है क्या जिसे तुम इस तरह पोशीदगी में पढ़ रहे थे। अगर ये कोई मामूली किताब है तो फिर छिपाने की क्या ज़रूरत?” रघुबीर ने दिल खोल कर अपने दोस्त को वो सब बातें शुरू से आखिर तक कह सुनाई। जो उसने अपनी इतालिका से सीखी थीं। ये बलवंत को भी बड़ी दिलचस्प मालूम हुई। और आज से ये दोनों मौक़ा ब मौक़ा बाइबल को साथ-साथ पढ़ने लगे। बहुत सी बातों में रघुबीर बलवंत का उस्ताद था। वो पहले पढ़ता और फिर समझाता था। एक अर्से तक वो इसी तरह करते रहे और इस राज के सबब वो और भी गहरे दोस्त हो गए। सच्य है बलवंत के लिए ये किताब जादू ही ठहरी। क्योंकि कॉलेज से निकलने से पहले उसने मुसम्मम इरादा (पुख्ता इरादा) कर लिया कि जो हो सो हो मैं तो इसी किताब को मानूंगा। और इसी मसीह का जिस का इस में ज़िक्र है। शागिर्द बनूंगा। रघुबीर का कॉलेज से निकल के क्या हाल हुआ। इस का ज़िक्र करने का मौक़ा नहीं पर पढ़ने वाले खुद तसव्वुर कर सकते हैं, कि जो नखल (खजूर का दरख्त, या आम दरख्त) शुरू ही से इस तरह सींचा गया। उस के फल कैसे हुए होंगे।

बलवंत ने कहा। अगर मैं शादी से पेशतर पहले मसीही ना हो जाऊं। तो पांव में बेड़ी पड़ जाने के बाद निहायत मुहाल होगा। पास ही शहर में पादरी साहब रहते थे। उसने उनसे मुलाकात की और अपना सारा हाल तफ़्सील वार कह सुनाया। पादरी साहब को इस जवान

का हाल सुनके बड़ी खुशी हुई। और आने वाले इतवार को बपतिस्मे का इतिजाम किया। शाम की इबादत के वक्त तमाम मसीही जमाअत के सामने बलवंत ने मसीह पर ईमान लाने का इज़हार किया। और बपतिस्मा पाया। हाँ उस वक्त बलवंत का कोई रिश्तेदार या गैर-मसीही दोस्त यहां हाज़िर ना था। और उस के घर वालों को वहम व गुमान भी ना था, कि वो आज शाम उस को जिस पर उनकी उम्मीदें बनी हुई थीं। खो रहे थे। सच्य है। बलवंत दुनिया के लिए खोया गया। और मर गया पर मसीह के लिए ज़िंदा हुआ था।

बलवंत गिरजे से निकल के फ़ौरन अपने घर गया और उस दिलेरी से जिसके लिए राजपूत मशहूर हैं। और जिस पर वो फ़ख़्र करते हैं। उसने अपने बाप और चचा से कह दिया कि मैं तो मसीही हो गया हूँ। बाप ने सोचा कि ये यूँही कहता है। सो पहले कुछ खयाल ना किया। मगर जब बलवंत निहायत संजीदगी से यकीन दिलाने लगा तब तो घर भर में हलचल मच गई। कोई कहता था कि क्या बलवंत दीवाना हो गया है। कोई कहता कि क्या मज़ाक़ करते हो। कहीं पुरखों का दीन ईमान बदला जाता है। ये बात अनहोनी है। खैर शाम हुई सब खाना दाना खा के सो रहे लेकिन बलवंत के बाप और चचा का दिल निहायत बैचैन था। नहीं नींद कहाँ! उधर बलवंत भी बिस्तरे पर पड़ा पड़ा सोच रहा था, कि अब क्या करना चाहिए। वो वहीं अपनी चारपाई की पट्टी के पास घुटने टेक कर दुआ मांगने लगा और निहायत हलीमी के साथ ये कहा कि “ऐ मसीह मुझे ताक़त दे कि मैं मुश्किलात का मुक़ाबला कर सकूँ। मैं मौत तक तेरा वफ़ादार खादिम बना रहूँगा।” उसी वक्त अजीब तौर से उस के दिल में तसल्ली महसूस हुई। और एक धीमी आवाज़ कान में सुनाई दी कि “मेरा फ़ज़ल तेरे लिए काफ़ी है।” बलवंत अभी घुटनों ही पर था कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और दरवाज़ा खोलने पर क्या देखता है कि बाप और चचा दरवाज़े पर खड़े हैं। और उनकी आँखों में से आँसू बह रहे हैं। चचा ने फ़ौरन सीने से लगा लिया। और रोते-रोते कहा, “बलवंत बलवंत ये तू ने क्या किया। हमें बेचैनी के मारे नींद नहीं आती। क्या तो सच-मुच मसीही हो गया?” बलवंत बोला। हाँ चचा जी। मैं आज ही शाम मसीही हो गया हूँ ये तो रोज़े की बात नहीं पर बड़ी खुशी की बात है। क्योंकि मसीही मज़हब में सच-मुच मुक्ती (नजात) है।” बाप। अरे भैया। आज तू हमें सिखाता है। क्या हमने तुझे पाल पोस के इस दिन के लिए इतना बड़ा किया? तू कहाँ ईसाइयों के बहकाने में आ गया। क्या तू हमारे कुल खानदान का नाश (तबाह करना) क्या चाहता है? अब चुप रह अगर तू ईसाइयों के बहकाने में आके हो भी गया है तो हम तीर्थ ले चलेंगे। और पंज (पंचायत) बैठा कर हर जा भर देंगे अभी कुछ बिगड़ा नहीं।” बलवंत “प्यारे पिता, और चचा जी मैं

और सब बातों में आपकी मानने को तैयार हूँ मैं आपका वही बलवंत हूँ। जो अब तक था। पर जो आप ये कहें कि मसीही धरम में मत रह तो ये नहीं हो सकता। क्योंकि मैंने परमेश्वर (खुदा) के आगे और बहुत से मसीहियों के आगे वाअदा कर दिया है, कि मैं येसू मसीह को जो जगत (दुनिया) का मुक्ती दाता (नजातदिहंदा) है। ना छोड़ूंगा। जो मैं क्षत्रिय का बेटा हूँ। तो बचन दे के कैसे पलटूँ?” देर तक बाप और चचा बलवंत से बहुत इसरार करते रहे। बलवंत... की तरह बे जुंबिश रहा। और आखिरकार वो उसे उसी के कमरे में छोड़ के चले गए। बलवंत ने फिर दुआ मांगी और सो रहा। सुबह को एक अजीब नज़ारा पेश आया। सबकी आँख बलवंत ही पर थी। और सब के लबों पर बलवंत का ही नाम था। घर के लोगों के चेहरों पर उदासी छाई हुई थी। माँ एक तरफ़ छाती पीट रही थी। गोया ऐसा मालूम होता था कि बलवंत गुज़र गया।

जब दो रोज़ हो गए और बलवंत अपने ईमान व एतिक़ाद में बलवंत रहा। तो उसे मालूम होने लगा कि यहां रहने में ईमान का खतरा है। लिहाज़ा वो तीसरी रात को अपनी तेज़ घोड़ी पर सवार हो के दबे-पाँव वहां से निकला। और ठीक बारह बजे मिशनरी साहब का दरवाज़ा आ खटकटाया मिशनरी बलवंत की आवाज़ पहचान के फिरती (तेज़ी) से दरवाज़ा खोला और उस के कहने से पहले ही बलवंत के वहां आने का मक़सद जान गया। उसे दफ़्तर में बिठा के उस के साथ दुआ की। और दिलासा (तसल्ली) दी। और फ़ौरन एक खत दूसरे शहर की मिशनरी के नाम लिख के उसे दिया और कहा कि वहां चले जाओ बलवंत एड़ी मारे रात ही रात वहाँ पहुंचा। यहां मिशनरी ने बढ़िया आओ-भगत से कुबूल किया और कुछ दिन आराम से वां रख के चुप-चाप दूर एक मदरिसा इल्मे इलाही को भेज दिया। अल-क़िस्सा बलवंत यहां खुदावंद में बलवंत होता गया। इस अर्से में उसके घर के लोगों का गुस्सा भी धीमा (आहिस्ता, कम) हुआ और वो आज इस चबूतरे (मुरब्बा या मुस्ततील बनाई हुई ऊंची जगह जहां पर लोग बैठते हैं) पर हमारे सामने हैं। उस के हक़ में रफ़्ता-रफ़्ता मसीह की ये बात पूरी हुई, “जिस किसी ने घरों या भाईयों या बहनों या बाप या माँ या बच्चों या खेत को मेरे नाम की खातिर छोड़ दिया है उस को सौ गुना मिलेगा। और हमेशा की ज़िंदगी का वारिस होगा।” (लूका 19:29) आईये आज हम इस बलवंत की बलवंत दलीलें सुनें और लोगों को ये भी बताएं कि बलवंत आज हमारे सामने इस बात का ज़िंदा सबूत है कि लोग रोटी ही की खातिर मसीही नहीं हो जाते।

बलवंत : फ़रमाईये जनाब मौलवी साहब। आज आपको क्या दर्याफ़्त करना है।

मौलवी : आज की बात ये है कि आप लोग ये कहते हैं कि इन्जील में मुहम्मद ﷺ का कोई ज़िक्र नहीं है। क्या आपका ये कौल नहीं है?

बलवंत : हाँ ये ठीक है। कुर्आन तो मसीह का शाहिद (गवाह) है मगर इन्जील में कोई ज़िक्र मुहम्मद साहब का नहीं कि जिससे ये साबित हो सके कि मुहम्मद साहब भी अम्बिया में से कोई एक थे।

मौलवी : पे खुश आज हम आपको साबित कर देंगे कि अगरचे आप लोगों ने बहुत सी बातें इन्जील में से निकाल डालीं। जो मुहम्मद ﷺ के नबी होने की शहादत (गवाही) देती थीं। तो भी आज तक कई एक बातें मौजूद हैं। जिनसे साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत मुहम्मद नबी आखिर उलज़मान हैं। और अल्लाह के नबी हैं। ज़रा इन्जील खोल के यूहन्ना के 14 बाब 16 आयत को देखें। वहां यूं मर्कूम (लिखा) है कि “मैं बाप से दरख्वास्त करूंगा। तो वो तुम्हें दूसरा वकील बख़शेगा। कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे। देखिए। साहिबान ये इबारत कैसी है। इलावा अज़ीं अगर आप लोग इसी यूहन्ना की इन्जील के 14, 15, 16 अबवाब को बग़ौर पढ़ें तो आपको मालूम होगा कि हज़रत ईसा बार-बार अपने शागिर्दों से कहते हैं, कि उनके बाद एक आएगा जिसका नाम अरबी में अल-बारकलेत और फ़ारसी में फ़ारकलेत है। इस लफ़ज़ के मअनी बिल्कुल वही हैं जो लफ़ज़ मुहम्मद या अहमद के। इस से और क्या साफ़ हो सकता है कि यहां एक नबुव्वत है कि हज़रत ईसा के बाद मुहम्मद ﷺ आएंगे। इस नबुव्वत के बारे में कोई शक़ हो नहीं सकता। क्योंकि हज़रत ईसा के बाद सिवाए हज़रत मुहम्मद के और कोई आया नहीं। उन्हीं पर नबुव्वत ख़त्म है। वही नबी आखिरुज़मान (आखिरी नबी) हैं। कहीए साहिबान। क्या ये दुरुस्त नहीं है?

बलवंत : सुनिए साहिबान मौलवी साहब ने अपने दावे के सबूत में यूहन्ना की इन्जील के 14 बाब की 16 आयत पेश की है। अगर आप 17 आयत पर नज़र करें। तो वहां 16 आयत की तश्रीह साफ़-साफ़ है जो येसू मसीह ही ने की है। वहां है, “यानी हक़ की रूह जिसे दुनिया हासिल नहीं कर सकती। क्योंकि ना उसे देखती और ना उसे जानती है। तुम उसे जानते हो क्योंकि वो तुम्हारे साथ रहती है। और तुम्हारे अंदर रहेगी।” इस तश्रीह से मसीह का मतलब यही था कि लोग इस की बाबत कुछ ग़लती ना करें।

1. मुहम्मद साहब कभी हक़ की रूह के नाम से नामज़द नहीं हुए।

2. अल्फाज़ “तुम उसे जानते हो क्योंकि वो तुम्हारे साथ रहती है। और तुम्हारे अन्दर रहेगी।”

गौरतलब हैं। सब साहिबान जानते हैं कि मुहम्मद साहब मसीह से 600 साल बाद आए। लिहाज़ा अगर ये नबुव्वत मुहम्मद साहब की बाबत होती तो क्योंकि उनके बारे में ये कहा जाता कि “तुम उसे जानते हो।” 600 साल कबल किस को मुहम्मद साहब की आमद का इल्म था? “वो तुम्हारे साथ रहती है। और तुम्हारे अन्दर रहेगी।” मुहम्मद साहब ना तो मसीह के शागिर्दों के साथ थे और ना वो किसी तरीके से भी शागिर्दों के अंदर रह सकते थे। और ना रहे। फिर लफ़ज़ “वकील” जो 14 आयत में आया है। इस की तश्रीह 26 आयत में साफ़-साफ़ कर दी गई है, कि “वकील” यानी रूह-उल-कुद्स जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा।” रूह-उल-कुद्स नाम मोहम्मद साहब का कुर्आन में कहीं नहीं है। और ना मुहम्मद साहब मसीह के नाम से आए।

अगर यूहन्ना के 16 बाब की 13 आयत से 15 आयत तक पढ़ें। तो मालूम करेंगे कि मसीह और रूह-उल-कुद्स में ऐसी यगानगत (इतिहाद, कराबत इतिफ़ाक़) है, कि गोया वो दोनों ही हैं। लेकिन मसीह और मुहम्मद साहब में बड़ा भारी इख़्तिलाफ़ है। दोनों की तालीम में ज़मीन व आस्मान का फ़र्क़ है। और ख़याल फ़रमाईये कि यहां लिखा है कि मसीह का भेजा हुआ फ़ारक़लेत आया। ज़रा गौर करने की बात है, कि अगर मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब के कहने के मुताबिक़ फ़ार-कलेत से मुराद हज़रत मुहम्मद साहब से है। और कि वो नबी आखिर अल्ज़मान (आखिरी नबी) हो के मसीह की बादशाहत पर काबिज़ हैं तो ये दोनों बातें आपस में मुवाफ़िक़त नहीं रखतीं। क्योंकि कासिद भेजने वाले से बड़ा नहीं हो सकता और ना भेजने वाले पर अपने आपको तर्ज़ीह दे सकता है।

हम कई एक और मज़बूत दलीलें पेश करेंगे जिनसे साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि इस नबुव्वत में हज़रत मुहम्मद साहब की तरफ़ मुतलक़ इशारा नहीं। सब साहिबान। मेहरबानी से ज़रा इन्जील खोल के इन दो आयतों का मुलाहिज़ा फ़रमाईये। और इनका मुकाबला कीजिए। देखिए रसूलों के आमाल की किताब जो इसी यूहन्ना की इन्जील के बाद है। इस के पहले बाब की चौथी आयत में लिखा है, “और उसने यानी मसीह ने बुला कर उनको (यानी अपने शागिर्दों को) हुक्म दिया कि यरूशलम से बाहर निकल न जाओ। बल्कि बाप के उस वाअदे के पूरा होने के मुंतज़िर रहो जिसका ज़िक़ तुम मुझसे सुन चुके हो।” अब

देखिए इसी किताब का दूसरा बाब 1 ता 4 आयत, “जब ईद पंतीकोस्त का दिन हुआ तो वो सब एक जगह जमा हुए। यका-यक आस्मान से ऐसी आवाज़ आई। जैसे ज़ोर की आंधी का सन्नाटा होता है। और इस से सारा घर जहां वो बैठे थे गूँज गया और उन्हें आग के शोले की से फटी हुई ज़बानें दिखाई दें। और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। और सब। (ज़रा गौर फ़रमाईये) रूह-उल-कुद्स से भर गए।” साहिबान अब आप सब यूहन्ना की इन्जील की इन बातों पर जिनका ज़िक्र हो चुका है। और आमाल की किताब के इन दो मुकामात की बातों पर एक साथ कीजिए। यूहन्ना की इन्जील में रूह-उल-कुद्स के भेजे जाने का वाअदा किया गया। आमाल के पहले बाब में मसीह ने आस्मान पर जाने से पेशतर अपने शागिर्दों को जमा करके हुक्म दिया कि “वो यरूशलम में ठहरे रह के रूह-उल-कुद्स का इंतज़ार करें।” और दूसरे बाब में ज़िक्र है कि ये “रूह-उल-कुद्स बड़े ज़ोर के साथ नाज़िल हुआ।” क्या कोई कह सकता है कि रूह-उल-कुद्स या फ़ार-कलेत के भेजे जाने के वाअदे और नुज़ूल के दर्मियान 600 साल का अर्सा हुआ? क्या मसीह के शागिर्द 600 साल तक यरूशलम में फ़ार-कलेत के इंतज़ार में ठहरे? ऐसा खयाल करना महज़ जहालत होगी। वो 100 साल के अंदर-अंदर सब गुज़र चुके थे। रूह-उल-कुद्स के वाअदे के सिर्फ 10 दिन बाद ये नबुव्वत पूरी हुई। उन्ही लोगों की ज़िंदगी में कि जिनसे ये वाअदा किया गया था। लिहाज़ा इस में हज़रत मुहम्मद साहब की तरफ कुछ इशारा नहीं है।

मौलवी : अच्छा देखिए। इस यूहन्ना की इन्जील 14 बाब की 30 आयत में साफ़ मर्कूम है कि मसीह ने कहा कि “दुनिया का सरदार आता है।” क्या ये नबुव्वत साफ़ साफ़ हज़रत मुहम्मद ﷺ के बारे में नहीं है? ये हज़रत का एक मशहूर लक़ब है।

बलवंत : जनाब मौलवी साहब। अगर मैं साफ़-साफ़ खोल के बताऊं कि ये सरदार कौन है तो आपको बुरा लगेगा। अगर आप लूका 10:18, यूहन्ना 12:31, 16:11, 2 कुरिन्थियों 4:4, इफ़िसियों 2:2 और 6 बाब 11,12 मुलाहिज़ा करें तो आप पर आश्कारा (वाज़ेह) हो जाएगा कि ये होलनाक शख्स कौन है।

मौलवी : (घड़ी देखते हुए) ख़ैर अब कहना सुनना तो बहुत है। अब कल हम एक और बात पर गुफ़्तगु करेंगे। यानी मसअला तस्लीस। आप कल फिर 4 बजे तशरीफ़ लाइयेगा।

बलवंत : बहुत बेहतर कल का मज़मून तस्लीस है। आदाब अर्ज़।

मौलवी : तस्लीमात अर्ज़।

मुनादों की इन पुर ज़ोर बातों ने कितनों के तो दाँत खट्टे किए लेकिन इस कसीर जमाअत में बहुत ऐसे भी थे जो बिना तास्सुब (बिना किसी फ़र्क) के इन बातों को अपने दिल में तौल रहे थे। और किसी क़द्र मसीही मज़हब की बाबत और इल्म हासिल करने की आरजू उन के दिल में पैदा हो गई थी। चुनान्चे जब मुनादों ने हाथ में बाइबल, इन्जील ट्रेक्ट वगैरह ले के ये ऐलान किया कि जो साहिबान चाहें हमसे ये किताबें और पर्चे खरीदें और मुफ्त लें। कई सौ किताबें बेची और बाँटी गईं। स्कूल के उस्ताद और नीज़ तलबा ने इस में मुनादों की मदद की और बड़ी खुशी के साथ इस शाम मुनाद अपने अपने घर गए। इस काम के लिए घरानों में दुआ बदस्तूर जारी है और इस में कुछ शक नहीं कि खुदा का हाथ इस तमाम इंतज़ाम में रहा है। उसने बंदों के ज़रीये कलाम किया और उस का कलाम उस तक खाली ना लौटेगा। अब कल के तक़रीर कनिंदा और इस के दिलचस्प और पुर ज़ोर दलीलों पर कल गौर करेंगे। इस की सवानिह उम्मी निहायत दिलचस्प है।

रोज़ पंजुम

पेशतर इस के हम रोज़ पंजुम की बहस शुरू करें। हम दीबाचे के तौर पर आज के तक़रीर कनिंदा की ज़िंदगी का मुख़तसर अहवाल सुनाते हैं। क्योंकि जब आप साहिबान इस मुदल्लिल (दलाईल देना) और पुर-ज़ोर तक़रीर को सुनेंगे तो ज़रूर दर्याफ़्त करेंगे कि ये शख्स कौन है।

गिरजाघर के पीछे एक छोटा सा मकान नज़र आता है। उस के एक कमरे में एक सफ़ेद रेश बुजुर्ग निहायत गौर व फ़िक्र में महव (गुम) दिखाई देता है। क़द लंबा, सीना चौड़ा, चेहरा नूरानी चमक रहा है। अगरचे उम्र रसीदा है। ताहम मज़बूत और तंदुरुस्त मालूम होता है। 70 साल से ऊपर निकल गया है। लेकिन ना तो चशमा उस की आँखों पर है और ना चलने फिरने में लाठी की मदद है। पुराने ज़माने के बुजुर्ग ऐसे ही हैं। आजकल के जवान उनके सामने शर्मिदा हैं। इस बुजुर्ग का नाम-ए-नामी पादरी गंगा राम है। और इसी गिरजाघर का जो सामने दिखाई देता है पासबान है। कोई उसे दादा जी कह के पुकारता है कोई नाना जी और ज़्यादा उम्र वाले उसे पापा जी कह के उस की तरफ़ उल्फ़त (मुहब्बत) का इज़हार करते हैं। करीब 25 बरस से वो यहां की कलीसिया की खिदमत कर रहा है। और लोग उसे निहायत जानते। उस का बर्ताव सब छोटे बड़ों के साथ ऐसा ही है जैसा अपने खानदान के साथ बहुत से लोग अपने दिल के राज़ आके उस के आगे खोल देते हैं। क्योंकि उन्होंने उसे हकीकी मददगार व हमदर्द पाया है। जवान अपने मज़हबी शुक्क व मुश्किलात इस से आके बयान करते और वो उनके शुक्क (शक की जमा) को दूर और मुश्किलात को सहल (आसान) करता है। अगर किसी घराने में मियां बीबी के दर्मियान ना इतिफ़ाकी पैदा हो जाती या ना समझ मियां बीबी आपस में लड़ते झगड़ते तो वो फ़र्दन फ़र्दन इसी बुजुर्ग के पास आके अपनी शिकायतें पेश करते और वो उन्हें ऐसे समझाता। जैसे अपने बेटे बेटियों को। अल-गर्ज़ ये बुजुर्ग अपनी कलीसिया की पतवार को थामे हुए आंधी व तूफ़ान में हो के ब-सलामती खेलता चला जाता है। और लोगों को इत्मीनान हो गया है, कि जब तक ये हमारा पासबान है तब तक ये हमारे पास एक हकीकी हमदर्द व मददगार मौजूद है।

आज हम इस को और रोज़ की बनिस्बत ज़्यादा गौर व फ़िक्र में मसरूफ़ पाते हैं। कई एक किताबें उस के सामने खुली रखी हैं। हाँ एक तरफ़ कुर्आन भी रखा है। कभी वो अपनी पुरानी बाइबल जो निशानात से भरी है उलट-पलट करता है। कभी कुर्आन टटोलता है। कभी वो झट से एक कोने में हो जाता है। और जब हम एक तरफ़ से झाँकते हैं तो इस मर्द-ए-खुदा को घुटने टेके पाते हैं। इस सारी तफ़्तीश और मेहनत का खास सबब यह था कि रात एक जवान ने आके दरवाज़ा खटखटाया इस बुजुर्ग का ये दस्तूर है कि बिला यह पूछे कि “कौन है?” फ़ौरन यही लर्बों से निकलता है कि “आओ।” ये दरवाज़ा खटखटाने वाला तो बलवंत है। जिसे गंगाराम बहुत प्यार करता है। बलवंत इस बुजुर्ग के पास ऐसा बे-तकल्लुफ़ हो के बैठ जाता है गोया वो उस ही का घर था। बुजुर्ग पूछता है। “कहो बेटा

बलवंत कैसे आए।” बलवंत आज की मुनादी का सब हाल तफ़्सील-वार कह सुनाता है। और बाद को कहता है कि “पापा जी कल का मज़मून तस्लीस है। हम लोगों ने अब तक तो आपको तकलीफ़ ना दी। और आप ही मार चलाई। लेकिन कल के लिए सबकी राय ये है कि आप चबूतरे (मुरब्बा या मुस्ततील बनाई हुई ऊंची जगह जहां पर लोग बैठते हैं) पर चल के ज़रा मुसलमानों के मुँह सीधे कर दीजिए। “यही सबब है कि आज हमारा बुजुर्ग इस क़द्र गौर व फ़िक्र में है। चार बजे आज इस मर्द-ए-खुदा के ज़रीये खुदावंद येसू मसीह का जलाल ज़ाहिर किया जाएगा।”

अब ज़रा इस बुजुर्ग की गुज़श्ता ज़िंदगी का मुख्तसर हाल सुन लीजिए। गंगा राम या गंगो क्योंकि बचपन में वो गंगोही कहलाता था। एक छोटे से गांव में एक गडरिए के घर में पैदा हुआ। लिहाज़ा तालीम के लिहाज़ से ये बिल्कुल अनपढ़ रहा। क्योंकि गांव के पण्डित ने बड़ी मुश्किल से दो किताबें हिन्दी की इस से खत्म कराईं। 9, 10 साल की उम्र में ये और गुडरियों के साथ भेड़ बकरीयां चराने जंगल में जाने लगा और जल्द इस काबिल हो गया कि एक छोटा सा झुण्ड इस के सपुर्द कर दिया गया। ये ब-दस्तूर सुबह को रोटी खा के और कुछ साथ ले के अपने झुण्ड के साथ जंगल को निकलता और शाम को वापिस घर आता था। गांव के लोगों की ज़िंदगी के लिहाज़ से गंगाराम के माँ बाप आसूदा हाल (खुश-हाल) थे। उनके पास मवेशियों का अच्छा खासा शुमार था। ना सिर्फ़ भेड़ बकरियां ही बल्कि गाएँ, भैंसें और बेल भी थे। इलावा मवेशी रखने के जो गडरियों का खास काम है। इन के कुछ खेती भी होती थी। और गांव के लोगों के बीच इज़्जत की नज़र से देखे जाते थे। गंगा राम के तीन छोटे भाई और एक बहन थी। और दो चचा भी इसी गांव में रहते थे। इसलिए घराना भी बड़ा था। गंगा राम शुरू ही से अच्छा होनहार लड़का मालूम होता था। और निहायत जसीम व क़द-आवर था। जब ये 18 साल का जवान हो गया तो ना तो ये किसी इन्सान से और ना जंगली जानवर से डरता था। अक्सर भेड़िये को देख के अकेला इस से लड़ा करता था।.. बल्कि एक दफ़ाअ कुशतम कुशता भी हो गई। यहां तक कि कोई आधे घंटे तक भेड़िये से लड़ता रहा कि इतने ही में उस के साथी चरवाहे आ गए और सबने मिलकर भेड़िये को मार डाला। इस लिहाज़ से कुछ-कुछ वो बहादुर दाऊद की मानिंद था।

सब कुछ अच्छा था लेकिन एक बात ये थी, कि गंगा राम में आवारागर्दी की तबियत थी। लिहाज़ा जब कभी ये तबियत इस में जोश मारती थी वो इधर उधर गांव में अपने

रिश्तेदारों के घर चल पड़ता था। उसे एक ही जगह रहना पसंद ना था। और अक्सर इस छोटी सी उम्र में उस के खयाल दूर दराज़ सफ़र की तरफ़ रागिब होते थे। हुस्न-ए-इतिफ़ाक़ से उसे एक और जवान साथी भी एसा ही मिल गया था। और ये दोनों अक्सर जब जंगल में गल्लाबानी करते तो किसी ऊंची चट्टान पर बैठ कर दूर-दूर मुल्कों वगैरह की बाबत बहुत ख़्याली पुलाव पकाया करते थे। और ज़्यादातर साथ ही रहते थे। क्योंकि मिस्ल मशहूर है कि “कुंद हम-जिंस बाहम जिन्स परवाज़।”

एक दिन का ज़िक्र है कि गंगा राम का साथी दोस्त बसंता अपने एक रिश्तेदार की शादी में शहर बरेली को गया। और वहां कई रोज़ तक उस का रहना हुआ। चूँकि घूमने की तबीयत उस की भी थी। उसने तमाम शहर छान मारा। सुबह को निकलना और शाम को घर वापिस आना। यही उस का काम था। ये घूमते-घूमते खूब खुश हो हो के सोचता था, कि घर चल के गंगा राम को बहुत सी नई बातें बताऊँगा। इन दिनों बरेली में..... वगैरह जज़ीरों के लिए कुलियों और तरह तरह के मज़दूरी पेशा लोगों की भर्ती हुआ करती थी। कंपनियों के एजेंट इधर-उधर घूमते फिरते थे, कि ऐसे लोगों को जो टापूओं में जा के कम अज़ कम चार साल काम करने के लिए राज़ी हों। पा के भर्ती करें। ये लोग ज़्यादातर दिहात के लोगों की तलाश करते थे क्योंकि एक तो वो जफ़ाकश और मेहनत उठाने वाले होते हैं। और दूसरे इन एजेंटों के बहकाने में जल्दी आ जाते हैं। चुनान्चे कोई अजब नहीं कि बसंता को जो देहाती होने की वजह से छिपा ना रह सकता था। इस तौर पर आवारागर्दी करते हुए एक भर्ती करने वाले ने भांपा जूँही बसंता सड़क पर से इधर-उधर देखता हुआ एक उचक्का सा निकला चला जा रहा था। यूँही एक भर्ती वाला उस के साथ हो लिया। और मौक़ा पा के चलते चलते उस से पूछने लगा, कि कहो भाई जवान कहाँ के रहने वाले हो। बसंता ने अपना गांव थाओं बताया। और भर्ती वाले ने बात ही बात में ऐसी चालाकी से अपना मज़मून छेड़ा कि बसंता बिल्कुल उस की बातों से ना बिदका बल्कि फ़रेफ़ता हो गया। उसने अपने दिल में कहा कि वाह भला इस से अच्छा मौक़ा मेरे और दोस्त गंगो के लिए क्या हो सकता है। यहां भर्ती हो के सात-समुंदर पार के टापूओं (जज़ीरा, खुशकी का वो क़ता जो चारों तरफ़ से पानी से घिरा हो) को सैर करें। उसने फ़ौरन भर्ती वाले को अपना नाम पता लिखा दिया। और वाअदा किया कि मैं अपने एक दोस्त को हमराह लेकर जितना जल्द मुम्किन हो लौटूँगा।

इतने में इधर शादी वादी भी हो चुकी। और बरात वापिस लौटी। बसंता भी दिल ही में मगन अपने दोस्त गंगो के पास आया। और दूसरे दिन जब ये दोनों भेड़ बकरियां चराने जंगल को निकले उसने बरेली की सारी कैफ़ीयत कह सुनाई। इन दोनों ने मुसम्मम इरादा (पक्का इरादा) कर लिया कि ज़रूर बरेली चल के भर्ती होंगे। चुनान्चे उस दिन से वो दोनों सोचने लगे कि कब घर से निकलें। इधर सैर व स्याहत की तबीयत ज़ोर मारती थी। उधर घर वालों की उल्फ़त खींचती थी। क्योंकि इन दोनों की ना सिर्फ़ शादी ही हो चुकी थी। बल्कि एक एक बच्चा भी था। इसी सोच व फ़िक्र में कई दिन गुजर गए और दोनों में से किसी की हिम्मत ना हुई कि इस क़द्र दूर व दराज़ सफ़र इख़्तियार करे। एक दिन जब ये जंगल में गल्लाबानी कर रहे थे। दोनों ने सलाह की कि यूं नहीं बनेगी। एक काम करो। आज शाम जब रोटी खाने बैठो। तो क़सम खाओ कि जो फिर इस चौके पर रोटी खाएं तो गाय खाएं। इस तरह इरादा कर के वो दोनों शाम को हस्बे-मामूल घर गए। और जैसा इरादा किया था वो दोनों दिल में क़सम खा के रात को अपने अपने घर से निकल पड़े और एक मुक़रर किए हुए अड्डे पर आ मिले। रात ही बरेली की राह ली। और भर्ती के मुक़ाम पर आ पहुंचे। भर्ती वाला दोनों मज़बूत जवानों को देखकर बाग़-बाग़ (खुश) हो गया। इसी हफ़्ते में एक जहाज़ कलकत्ता से छूटने वाला था। लिहाज़ा वो दोनों लिखा पढ़ी के बाद फ़ौरन कलकत्ते को रवाना हो गए। रेल के सफ़र में कई एक बड़े-बड़े स्टेशनों पर से उनका गुजर हुआ और ये इस सैर से बहुत खुश थे। अल-ग़र्ज़ भर्ती वाला उनको ले के कलकत्ता पहुंचा और इस के दूसरे ही रोज़ वो जहाज़ पर बैठ के और बहुत से मज़दूरों के साथ ट्रीनेडाड के लिए रवाना हुए जहाज़ पर बैठ के तो उनका दिल खुश था। लेकिन जब उनको समुंद्र की बीमारी हुई। जो उन सबको जो समुंद्री सफ़र के आदी नहीं हैं, हुआ करती है। तो उन्हें घर याद आया। ख़ैर कुछ दिन में ये बहरी सफ़र के आदी हो गए। और बहुतों से जो जहाज़ पर उनके मुवाफ़िक़ देहाती थे। दोस्ती हो गई। तो फिर ये सैर का मज़ा लेने लगे उन दिनों के जहाज़ आजकल के जहाज़ों से बहुत मुतफ़रि़क़ थे। ये आहिस्ता-आहिस्ता जैसे हवा हो। वैसे जाते थे। और रस्ता भी लंबा था। सो कई महीनों में ये मंज़िल-ए-मक़सूद पर पहुंचे। जहाज़ से उतर के सब मज़दूर एक बड़े अहाते में जमा किए गए। और वहां जज़ीरे के मुख्तलिफ़ हिस्सों में तक़सीम किए गए। यहां उस वक़्त गंगा राम और बसंत राम को सख्त सदमा गुज़रा जब उनको मालूम हुआ कि वो दोनों दोस्त एक साथ ना रह सकेंगे क्योंकि ये दोनों जुदा-जुदा हिस्से के लिए चुने गए। ख़ैर वहां उनकी मर्ज़ी चल नहीं सकती थी। मजबूरन दोनों दोस्तों ने एक दूसरे को रो-रो के खुदा-हाफ़िज़ कहा और फिर ये कभी

ना मिले। गंगा राम को चाय और क़हवा के बागीचे में काम करने को मिला। और चार साल तक उसने बड़ी वफ़ादारी और मेहनत से काम किया। उस से बागीचे का मालिक बहुत खुश था। क्योंकि गंगा राम ने कभी उसे नाराज़ ना किया था। सिर्फ़ चार साल तक गंगा राम को वहां काम करना था और अब वो आज़ाद था कि अगर चाहे तो हिन्दुस्तान को बग़ैर जहाज़ का किराया भरे वापिस लौटे। लेकिन उसे इन टापूओं (जज़ीरा, खुशकी का वो क़ता जो चारों तरफ़ से पानी से घिरा हो) में रहना यहां तक पसंद आया कि उसने वहीं रहने का इरादा कर लिया। अब वो आज़ाद था कि जहां चाहे वहां काम करे। सो उसने और अतराफ़ के जज़ीरों में जगह जगह सैर करते हुए तरह तरह की नौकरियां कीं। और आमदानी भी माकूल थी। इस अर्से में उसने कुछ मामूली बोल-चाल की अंग्रेज़ी भी सीख ली थी। क्योंकि वहां ज़्यादा अंग्रेज़ी ही बोली जाती थी। अब एक बड़ी तब्दीली गंगा राम की ज़िंदगी में होने वाली थी। जिससे उस की ज़िंदगी का रुख बिल्कुल पलट गया।

इन जज़ीरों में भी मिशनरी हैं और मिशन का काम होता है। गंगा राम के कई एक मसीही दोस्त थे जिनके साथ वो हर इतवार को गिरजे जाया करता था। ये ना समझना चाहिए कि अब कोई मज़हबी भूक प्यास इस में पैदा हो गई थी। लेकिन सबब ये था कि 4,5 साल तक इन जज़ीरों में रहने के बाद अब गंगाराम वही गडरिया ना रहा था। इस के पहनने खाने, रहने सहने और बातचीत में कुछ और ही बात आ गई थी। अगर बरेली से रवाना होने के वक़्त उस की तस्वीर खींची जाती तो ऊंची गाड़े के धोती और गाड़े की अंगरखी बदन पर होती। सर पर सफ़ेद पगड़ी और पांव में नर्मी की मज़बूत जूती। हाँ हाथ में लाठी थी। अब अगर उस के गांव के लोग बल्कि थोड़ी देर के लिए उस के घर वाले भी उसे देखते तो ना पहचानते। क्योंकि सर्द मुल्क की आब व हवा ने ना सिर्फ़ उस के रंग ही में कुछ फ़र्क़ कर दिया था। बल्कि अब वो गर्म काली बानात की पतलून और कोट पहने हुए है। सर पर विलायती टोपी है और पांव में मज़बूत काले चमकते हुए बूट हैं। अब तो कुछ ठाठ ही और है। लिहाज़ा वो सिर्फ़ मसीहियों की सोहबत में रहने और विलायतियों में दम मारने (शेखी मारने, दावे करने) की वजह से शौक़िया तौर पर गिरजे जाया करता था। रफ़ता-रफ़ता उस की जान पहचान एक मिशनरी साहब से हो गई जो वहाँ मिशन का काम करते थे। ये बुजुर्ग मिशनरी किसी वक़्त एक मुद्दत तक हिन्दुस्तान में कामयाबी के साथ काम करते रहे और हर दिल-अज़ीज़ (हर एक को पसंद आने वाले) थे। लेकिन रफ़ता-रफ़ता सख़्त मेहनत करने और चंद दीगर वजूहात से उनकी सेहत यहां तक खराब हो गई कि आख़िरकार डाक्टरों ने उन्हें मजबूर किया, कि वो अपने मुल्क को फ़ौरन लौटें। ये अमरीका

में एक अर्से तक रहने के बाद फिर काम करने के काबिल हो गए और वापिस हिन्दुस्तान आना चाहते थे। लेकिन डाक्टरों ने दूर अंदेशी कर के सलाह दी कि किसी गर्म मुल्क में काम ना करें। चूँकि उन्हें हिंदूस्तानियों से उल्फत (मुहब्बत) हो गई थी। उन्होंने ट्रेड एंड जज़ीरा के हिंदूस्तानियों के बीच काम करने का फैसला कर लिया। और अब अर्से से यहां हैं यही विलायती बुजुर्ग है जिसने मेहनत करके गंगा राम को अंग्रेज़ी पढ़ाई। और हिन्दुस्तानी ज़बान के सही इस्तिमाल में भी कुछ मदद की। यहां तक कि रफ़ता-रफ़ता उन्ही की मेहनत और दुआ का नतीजा ये हुआ कि गंगा राम मसीह का सच्चा शागिर्द बन गया और अपने बुजुर्ग मिशनरी के काम में बड़ी इमदाद का ज़रीया ठहरा। यूँ गंगा राम को वहां का काम करते सीखाते करीब दस साल हो गए। अब घर और वतन की उल्फत ने ज़ोर मारा और उसने हिंद को वापिस आने का क़सद (इरादा, नीयत) किया। थोड़े अर्से में एक जहाज़ हिंद के लिए रवाना होने वाला था। लिहाज़ा गंगा राम और उस का एक और हिन्दुस्तानी दोस्त दोनों ही रवाना हुए। गंगा राम और उस के दोस्त ने एक अच्छी खासी रक़म कमाई थी जो कि वहां के बैंक में जमा थी। और जब बैंक वालों ने पूछा कि कहो अगर तुम सफ़र में हिन्दुस्तान पहुंचने से पहले मर जाओ तो तुम्हारा रुपया किस को दिया जाये। तो गंगा राम के दोस्त ने चूँकि उस का कोई आगे पीछे ना था लिखवा दिया कि अगर मैं गुज़र जाऊं तो मेरा सब रुपया मेरे दोस्त गंगाराम को मिले। और जब गंगा राम से यही सवाल किया गया तो अगरचे गंगाराम के घर वाले थे तो भी चूँकि उस के दोस्त ने इस का नाम लिखवाया था। गंगा राम ने भी यही मुनासिब समझा कि अपने दोस्त कृपा शंकर का नाम लिखाये। चुनान्चे ये सब लिखा पढ़ी करा के गंगा राम और कृपा शंकर दोनों बड़ी खुशी से जहाज़ पर सवार हो के रवाना हुए। जब ये करीब आधे रास्ते में पहुंचे तो इतिफ़ाक़ से ऐसा हुआ, कि जहाज़ पर हैज़ा फैला और बावजूद डाक्टर की कोशिश और गंगा राम की तीमारदारी के कृपा शंकर गुज़र गया। इस से गंगा राम को सख़्त सदमा हुआ। और कृपा शंकर के साथ ही गंगा राम के लिए इस जहाज़ की सारी रौनक और दिलचस्पी उठ गई। ख़ैर कई महीनों का मरहला कर के जहाज़ कलकत्ता की उस बंदरगाह में आ पहुंचा। जहां से गंगाराम और बसंत राम दस साल हुए। दहक़ानी (दिहात या गांव का बाशिंदा या किसान) सूरत में बे पैसा कोड़ी रवाना हुए थे। गंगाराम ने अपना और अपने मर्हूम दोस्त कृपा शंकर का सामान जहाज़ से उतारा। और बैंक में जा के अपना रुपया मए उस रुपये के जो कृपा शंकर बज़रीया वसीयत गंगाराम के नाम छोड़ मरा था वसूल किया। और दूसरे दिन रेल में बैठ कर अपने गांव की राह ली।

तीन दिन व रात सफ़र करके गंगाराम अपने गांव को पहुंचा। और तमाम गांव में शोर हो गया कि “अरे काले पानी का आदमी आया। काले पानी का आदमी आया।” काले पानी का आदमी गांव वालों ने उसके काले कपड़े देखकर कहा। जो तब्दीलियां गंगाराम में हो गई थीं। उनका ज़िक्र हम ऊपर कर चुके हैं। लिहाज़ा कुछ अजब नहीं कि उस के घर वालों ने भी उसे ना पहचाना। वो बाहर चौपाल में बैठा और एक बड़ी भीड़ लोगों की उसके इर्दगिर्द जमा थी। पहले उस की बुढ़िया माँ निकल आई। और थोड़ी देर के बाद उसे पहचान के गले लग-लग के रोने लगी। इस पर उस के चचेरे भाई बाहर निकल आए। और सब मिलकर गंगा राम को अंदर ले गए। उस की बीबी भी यहां थी। लेकिन उसने हिंदू बेवाओं का लिबास इख्तियार कर लिया था। क्योंकि गंगा राम के लिए सब रो बैठे थे। गंगा राम का जो लड़का दस साल हुए दूध पीता था। अब वो अच्छा बड़ा हो गया था अफ़सोस कि गंगा राम का बाप और उस का चचा गुज़र चुके थे। जो चचेरे भाई उस के सामने छोटे लड़के थे। अब वो जवान हो गए थे। एक बड़ी तब्दीली गंगाराम ने घर पर पाई। उस वक़्त सख़्त काल हिन्दुस्तान में था। गंगा राम की बीबी और घर की सब औरतों का ज़ेवर जहाजन के यहां रहन (गिरवी) रख दिया गया था। घराना बड़ा था खाने वाले थोड़े थे। लिहाज़ा सब ही उस वक़्त बड़ी तंगी में थे। पूछपाछ और खातिर-ख्वाह तवाज़ो के बाद गंगाराम को घर का ये सब हाल माँ ने रो-रो के सुनाया। गंगाराम ने सबको दिलासा (तसल्ली) दिया और फ़ौरन बड़ा संदूक खोल के माँ के सामने रुपियों का ढेर लगा दिया। अब क्या था सब के दिल चांदी को देखकर बाग-बाग (बहुत ज़्यादा खुश) हो गए। फ़ौरन इकट्ठा अनाज ख़रीदा और ज़ेवर भी छुड़ा लिए गए। ख़ैर ये सब बड़ी खुशी से रहने सहने लगे। और कुछ दिन तक गांव की चौपाओं, गली कूचों में लोगों की गुफ़्तगु का मज़मून गंगा राम ही था। बल्कि वो एक नुमाईशी शैय बना रहा। चंद रोज़ इस तरह खुशी-खुशी में गुज़रे पर मुश्किल ये थी कि गंगा राम पर एक-एक दिन भारी गुज़र रहा था वो कम अज़ कम पाँच साल का सच्चा मसीही था उन लोगों की बुत-परस्ती वगैरह की बर्दाश्त ना कर सकता था। लिहाज़ा उसने एक दिन अपनी बीबी से राज़ खोला, कि मैं तो टरनेडाड टापू (जज़ीरा, खुशकी का वो क़त्ता जो चारों तरफ़ से पानी से घिरा हो) में मसीही हो गया हूँ। इतना कहना था कि गोया बारूद में बत्ती लगी। औरत बुदक के एक तरफ़ हुई और सब घर वाले थू थू करने लगे। सबने मिलकर सलाह दी कि जो परदेस में हुआ सो हुआ। रुपया हमारे पास है ही फिर बिरादरी में लेना कोई मुश्किल बात नहीं है। लेकिन गंगा राम को ये सब बातें क्योंकर गवारा हो सकती थीं? वो अब क्योंकर फिर इन बातों के सामने सर झुका

सकता था? उसने इन तमाम बातों से ना सिर्फ नकार किया। बल्कि अपने घर के लोगों को सलाह दी कि तुम सब मसीही हो जाओ। तो हम सब बड़े मेल मीलाप और सुख चैन से रहेगे। और परलोक (बहिश्त यानी जन्नत) में सुख पाएंगे। तरफैन अपनी अपनी जगह अड़े रहे। ना तो गंगा राम अब फिर हिंदू होगा। और ना उस के घर के लोग ही पुरखों के धरम मज़हब को बदलेगे। अल-क्रिस्सा नतीजा ये हुआ कि गंगा राम को अपनी जान की खातिर घर से भाग के नज़्दीक शहर के मिशनरी के हाँ पनाहगीर होना पड़ा। अब उस के पास सिवाए कपड़ों के और कुछ ना रहा था। क्योंकि रुपया पैसा सब घर के लोगों में बांट चुका था।

पादरी साहब ने उसे खुशी से कुबूल कर के काम दिया लेकिन जब पहली तारीख आई और तनख्वाह का वक़्त हुआ। तो गंगा राम को पाँच रुपया पादरी साहब ने ये कह के दीए, कि भाई जान मैं आपको ज़्यादा देना चाहता हूँ लेकिन दर्मियान साल का वक़्त है इस वक़्त मेरे हिसाब में ज़्यादा खर्च की गुंजाइश नहीं। खैर गंगा राम को ज़रा मायूसी हुई लेकिन खुदा का शुक्र करके वही पाँच रुपये कुबूल किए। उसने बहुत कोशिश की कि बीबी और लड़का साथ आएँ। लेकिन सब रायगां (जाए, फ़ुज़ूल) ठहरी। क्योंकि उसने मुसम्मम इरादा (पक्का इरादा) कर लिया था। कि मैं स्टानों के धरम में हरगिज़ हरगिज़ ना जाऊँगी। लिहाज़ा बज़रीया अदालत उसे तलाक़ देना पड़ा। और यूँ घर-बार छूटा, ज़मीन जायदाद छूटी, पैसा गया और नौकरी मिली तो पाँच रुपये की लेकिन गंगाराम मसीह में साबित-क़दम रहा। और अगरचे बारहा ना-उम्मीदी के बादलों ने उसे घेरा ताहम उस के दिल ने कभी जुंबिश ना खाई।

गंगाराम एक साल के बाद मदरिसा इल्म इलाही को भेजा गया। और वहां से होशियार मुनाद हो कर निकला। थोड़े ही अर्से में एक अच्छी मसीही खातून के साथ उस की शादी हो गई। और आज के दिन उस के पोते पोती हैं। और इस गडरिए को मसीह ने अपने पीछे बुला के अपने झुण्ड की गल्लाबानी दी है। हाँ गंगाराम ने मसीह की खातिर बहुत मुसीबत उठाई और सब कुछ खोया। लेकिन आज उस ही की गवाही है, कि उसने सौ गुना पाया। आज वो मसीह में खुश व खुर्रम है। क्योंकि इस से मसीह की कुद़्रत का तजुर्बा हासिल किया है। हमने अपने सामईन को गंगाराम की जिंदगी का अहवाल तफ़्सील-वार कह सुनाया, कि आप देखें कि मसीह कैसा कुद़्रत वाला है और अगरचे वो फ़ज़ल अल्लाह जैसे मौलवी को फ़ज़ल मसीह बनाता। प्रेम मसीह जैसे गरीब को कुद़्रत बख़शता। बलवंत के

बल को अपने लिए मख्सूस करता वह गंगा राम जैसे दहकानी (दिहात या गांव का बाशिंदा या किसान) को भी अपनी तरफ खींच के लोगों को हैरान करता है। ये वो राई का दाना है जिसमें चारों तरफ से हवा के परिंदे आके आराम पाते हैं। आईए अब बुजुर्ग की गुफ्तगु को तस्लीस जैसे अहम मज़मून पर सुन के खत उठाएं।

रोज़ शश्म

गुफ्तगु दरबारा तस्लीस

गंगाराम : अच्छा मौलवी साहब। फ़रमाईये तस्लीस की बाबत आपका क्या एतराज़ है।

मौलवी : आपकी तस्लीस की तईन अजीब है। आप तीन खुदा मानते हैं। आप ही खयाल फ़रमाईये कि कौनसी बात ठीक मालूम होती है। तीन खुदाओं को मानने वाले हिंदूओं और दीगर बुत-परस्तों से क्या बेहतर हो सकते हैं? आपका मसअला तस्लीस कुर्आन मजीद और अक्ल दोनों के खिलाफ़ है।

गंगाराम : सुने साहिबान मसीही मसअला तस्लीस मुख्तसरन ये है कि खुदा एक ही है। लेकिन उसकी खुदाई या उलुहियत (रब्बानियत) में तीन अक़ानीम हैं यानी खुदा तआला, कलाम-ए-खुदा और खुदा की रूह कलाम खुदा इन्सान बना। पाक रूह के ज़रीये कुँवारी मर्यम से पैदा हुआ। जो येसू मसीह के नाम से कहलाया ये तमाम राज़ इलाही अक्ल इन्सान से बाहर है। लेकिन खिलाफ़ तो नहीं।

मौलवी : तो अब आप खयाल फ़रमाईये। कि जो बात हमारी समझ में नहीं आती। उस को मानने से क्या फ़ायदा। देखिए मुहम्मदी मज़हब कैसा साफ़ और सीधा है। खुदा

एक ही है उस का भी जो सब नबियों पर मुहर है। वो मुहम्मद है। ये बात सब समझ सकते हैं।

गंगाराम : बहुत सी बातें ऐसी हैं कि हमारी समझ में नहीं आतीं। पर तो भी हम उनको मानते हैं। मसलन आप खुद अपने आप ही को नहीं समझते। इन्सान में अक्ल, रूह और नफ़्स माने गए हैं। आप नहीं समझते कि फ़ानी जिस्म में ग़ैर-फ़ानी रूह किस तरह रहती है। तो भी आप मानते हैं कि आप में रूह है। इलावा अज़ीं रूह अक्ल और नफ़्स तीनों जुदा-जुदा हैं। और तो भी आपकी शख़्सियत एक ही है। इसी तरह उलूहियत में तीन अक़ानीम हैं। लेकिन तो भी खुदा एक ही है।

मौलवी : रूह-उल-कुद्स तो खुदा नहीं क्योंकि ये तो जिब्राईल फ़रिश्ते का लक़ब है।

गंगाराम : हाँ मुहम्मदी इस नाम का इसी तरह इस्तिमाल करते हैं। लेकिन बाइबल में दोनों में बड़ा भारी फ़र्क़ है। जिब्राईल तो सिर्फ़ खुदा की मख़लूक़ है।

मौलवी : कुर्आन मजीद में इस मसअले तस्लीस की ताईद (हिमायत करने वाले) में कुछ नहीं मिलता। लिहाज़ा हम इस को नहीं मान सकते।

गंगाराम : हम मसीही बाइबल ही की बुनियाद पर इसे मानते हैं। तो भी कुर्आन में एक दो बातें गौरतलब हैं। अक्ल तो ये कि खुदा का नाम अल्लाह या अल-रब है। जो कि सीगा वाहिद है। और तो भी बारहा लफ़ज़ का इस्तिमाल किया गया है। इस से सीगा जमा आइद होता है। क्या इस से तस्लीस नहीं होती।

मौलवी : हरगिज़ नहीं। लफ़ज़, “हम” का वहां इस्तिमाल ऐसा ही है जैसा बादशाह अपने लिए हम का इस्तिमाल करते हैं।

गंगा राम : इस का आपके पास क्या सबूत है? अगर कुर्आन खुदा का दिया हुआ है। तो इस में कोई भी लफ़ज़ बेमाअनी नहीं हो सकता है।

मौलवी : कुछ भी हो ये बात अक़ल में नहीं आ सकती, कि एक हो और फिर तीन।

गंगाराम : इस का अक़ल में ना आना ही इस बात का सबूत है कि मसअला तस्लीस खुदावंद है। क्योंकि जो बात इन्सान की अक़ल में नहीं आती। तो वो इस को बना नहीं सकता।

ज़रा और खयाल फ़रमाईये। क्या आप मानते हैं कि खुदा के औसाफ़ में एक वस्फ़ (खूबी, सिफ़त) ये भी है कि वो अल-वदूद यानी प्यार करने वाल है?

मौलवी : हाँ वो ये सिफ़त रखता है।

गंगाराम : तो फिर क्या इस का यही मतलब नहीं कि खुदा में सिफ़त अल-वाहिद है। यानी उस की मुहब्बत ख़ालिस और बेरिया है। जैसे गोया वो बाप की अपने बच्चों की तरफ़ होती है।

मौलवी : हाँ फ़रमाईये।

गंगाराम : अच्छा तो मुहब्बत की सिफ़त खुदा में हमेशा से है या किसी वक़्त बाद में उस में पैदा हो गई?

मौलवी : ज़रूर शुरू ही से होगी।

गंगाराम : तो फिर मुहब्बत के लिए कोई दूसरी शैय होने चाहिए। कि जिससे मुहब्बत की जाये। आप बताईए कि ख़ल्क़त के ख़ल्क़ किए जाने से पेशतर खुदा ने किस से मुहब्बत की?

मौलवी : वो अपने आपसे मुहब्बत रखता था।

गंगाराम : क्या सिर्फ़ अपने ही से मुहब्बत करना कोई अच्छी सिफ़त है। अगर कोई शख़्स सिर्फ़ अपने ही से मुहब्बत करे। उसे हम अच्छा आदमी कहेंगे या खुदगर्ज़।

मौलवी : हाँ तो वो फ़रिश्तों से मुहब्बत रखता था।

गंगा राम : लेकिन फ़रिश्ते तो शुरू ही से थे नहीं। वो भी तो खुदा की खल्कत हैं।

अगर मुहब्बत एक अच्छी सिफ़त है। और खुदा की ज़ात में हमेशा से पाई जाती है। तो ये अक़ानीम के होने की दलील है और तस्लीस का मसअला ही इस मुअम्मे (गहरे राज़) को हल करता है।

इलावा अज़ी आप खुद मसीह को कलाम-उल्लाह और रूह-उल्लाह कहते हैं कि नहीं?

मौलवी : हाँ लक़ब उनके हैं। मगर ये महज़ लक़ब हैं। इनमें और कुछ राज़ नहीं हैं।

गंगाराम : लक़ब दो तरह से दीए जाते हैं। या तो सही मअनी रखते हुए या ग़लत अगर कोई आपको सुल्तान टर्की का लक़ब (ख़िताब) दे।

अब आप बताईए कि कुर्आन में येसू को कलाम-उल्लाह और रूह-उल्लाह का लक़ब किस ने दिया?

मौलवी : अल्लाह ने।

गंगाराम : आप खुदा को अल-हक़ कहते हैं। और ठीक कहते हैं। क्या जब खुदा येसू को अपना कलाम और रूह कहता है तो वो हक़ की बात कहता है।

मौलवी : बेशक। क्योंकि खुदा में दरोग़ (झूट, कज़ब, बोहतान) नहीं है।

गंगा राम : तब इस से साबित हो गया कि येसू दर-हक़ीक़त कलाम-उल्लाह और रूह-उल्लाह है। अब ज़रा आप तो ये बताईए कि लफ़ज़ “कलमा” के क्या मअनी हैं? ख़्वाह किसी का भी कलमा क्यों ना हो?

मौलवी : कलमा से मुराद वो बात है जो किसी के दिल की बात ज़ाहिर करे।

गंगाराम : दुरुस्त है कलमा दिल का इज़हार है। और चूँकि मसीह कलाम-उल्लाह है वो खुदा का इज़हार है। जिस तरह कलाम कलाम कुनिंदा है जुदा नहीं इसी तरह मसीह खुदा से जुदा नहीं लिहाज़ा वो खुदा है। लक़ब रूह-उल्लाह से भी मसीह की उलूहियत (रब्बानियत) साबित है।

हम तस्लीस के सबूत में दलील पेश कर रहे हैं। और सुनीए। आफ़ताब (सूरज) में गर्मी और रोशनी दो इसाफ़ (वस्फ़, ख़ूबी) हैं। इनके बग़ैर आफ़ताब आफ़ताब नहीं। ये तीनों एक तरह तो जुदा-जुदा हैं। तो भी एक हैं। जिस तरह आफ़ताब अपने आपको अपनी रोशनी से ज़ाहिर करता है। इसी तरह खुदा मसीह के ज़रीये अपने आपको ज़ाहिर करता है। चुनान्चे लिखा है कि “खुदा को किसी ने कभी नहीं देखा। इकलौता बेटा जो बाप की गोद में है। उसी ने इज़हार किया।” (यूहन्ना 1:18)

अज़ीज़ नाज़रीन चूँकि आज इस गुफ़्तगु का आखिरी रोज़ है। मुझ बुड़े को ये शर्फ़ (एज़ाज़) हासिल हुआ कि आपसे अहम मज़मून पर गुफ़्तगु करूँ। अब थोड़ा वक़्त और है कि हम सब जुदा होंगे। आप अपने घर जाएंगे हम अपने। लेकिन सवाल ये है कि हम इस मसीह से जिसकी बाबत हमने इन दिनों में इतनी तफ़्तीश (छानबीन) की है क्या करेंगे? क्या मसीह की नज़ीर (मिसाल) दुनिया की तारीख़ में कहीं मिलती है? क्या कोई शख्स सिवाए मसीह के और भी ऐसा हुआ जिसने गुनेहगार इन्सान के लिए अपनी जान दी। और मुर्दों में जी उठा। मसीह आप के लिए मरा जी उठा और आज उन सबको जो बड़े बोझ से दबे और मेहनत उठाते हैं वो अपने पास बुलाता है कि आराम दे। मेरे भाईयों ये ज़िंदगी हमको बार-बार ना मिलेगी। फिर मौक़ा ना मिलेगा। मैं बुढा आज आपके सामने शख्सि गवाही देता हूँ, कि मसीह से दूर हो के आराम नहीं है। उसने मुझे अजीब तौर से अपनी तरफ़ खींचा और अपना ख़ादिम बनाया। आप सुन चुके हैं कि मसीह ने फ़ज़ल-अल्लाह पर कैसा फ़ज़ल किया। प्रेम मसीह को अपने प्रेम के बंधनों से बाँधा। बलवंत जैसे जवान को अपने नाम की ख़ातिर कैसी-कैसी मुसीबत बर्दाश्त करने को बल दिया। और मुझ ग़रीब नाख्वान्दा (अनपढ़) दहक़ानी (दिहात या गांव का बाशिंदा या किसान) को भी अपनी बड़ी रहमत से अपना बनाया। जो उसने हम सब के और दीगर बेशुमार लोगों के लिए हर ज़माने में किया वो आज आप के लिए भी कर सकता है। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब आप कुछ भी क्यों ना कहें आपकी नजात सिर्फ़ मसीह ही से है। अफ़सोस सद-अफ़सोस अगर आज आप उसे कुबूल ना करें। बहस मुबाहिसे से चंदाँ फ़ायदा नहीं। हक़ (सच्च) की तलाश करना

चाहिए। मसीह कहता है, “राह हक़ और ज़िंदगी में हूँ।” वो मासूम बर्‍या है जो जहान के गुनाह उठा ले जाता है। आज ही और अभी उसे कुबूल कीजिए।

इतना कह के हमारा बुजुर्ग बैठ गया। जो असर भीड़ पर हुआ इस का बयान नहीं हो सकता। मौलवी मुहम्मद हुसैन के दिल में वो इब्तिदाई मसीही तालीम ज़ोर मार रही थी जो उसने मिशन स्कूल में पाई थी। बार-बार दिल में ऐसा करता था कि बस उठ के मसीह का इकरार करना चाहिए वो मसीही मज़हब की सदाक़त का बिल्कुल काइल ना था क्योंकि जहां ख़ुदा की रूह ज़ोर मारती है वहां शैतान भी अपना काम करता है। मुहम्मद हुसैन ने अपने जज़्बात को रोका। और सलाम कह के घर चला गया। उस में ताब (हिम्मत) ना थी कि और ज़्यादा गुफ़्तगु करे। उस के साथियों पर भी साफ़ ज़ाहिर हो गया था कि इन मसीहियों से बहस छेड़ के हमने अपना ही नुक़सान किया। एक अजीब संजीदगी लोगों पर छाई हुई थी। मसीही मुनादों ने अदब से सब सुनने वालों को सलाम किया और इस क़द्र तहम्मूल से सुनने के लिए उनका शुक्रिया अदा किया। और दावत दी कि अगर आप लोगों में से कोई भी मसीही मज़हब की बात और रोशनी हासिल किया चाहे। तो मकान पर आए और हम बखुशी मदद करेंगे। सब रुख़सत हुए और मुनाद भी बमसरत ख़ुशी से घर गए। दूसरे रोज़ पादरी गंगा राम ने सबको गिरजाघर में जमा करके एक इबादत शुक्रगुजारी की और मौलवी मुहम्मद हुसैन और उन सब के लिए जिन्होंने उन के कलाम को सुना था दुआएं की गईं।

अब हम अपने नाज़रीन को थोड़ी देर के लिए मुहम्मद हुसैन की तरफ़ फिर तवज्जोह दिलाते हैं। मुहम्मद हुसैन के दिल में बेचैनी ने बड़ा ज़ोर मारा। लेकिन वो बार-बार अपने दिल को दबाता और उनके खयालात को दूर करने की कोशिश करता था। एक अजीब तब्दीली उस की ज़िंदगी में हो गई थी। जो कि उस मुकम्मल तब्दीली का शुरू थी। जो उस में बाद को होने वाली थी। वो अगरचे अब रसीमा तौर पर रोज़ा नमाज़ करता रहा तो भी उस का दिल इन बातों में मुतलक़ ना लगता था। अब दीगर मुसलमान मौलवियों वगैरह के दर्मियान उतनी आमद व रफ़्त (आना जाना) भी ना रही। और उस के जान पहचान के लोग ज़रा हैरत की नज़र से उसे देखने लगे। होते-होते इस बात को दो साल हो गए। उस वक़्त सारे गांव में ताऊन (एक मोहलिक और मुतअददी वबा जिसमें छाती, बग़ल या खीसे के नीचे गलटियां निकलती हैं और तेज़ बुखार होता है) की वबा फैली उस बेचारे मुहम्मद हुसैन पर सख़्त मुसीबत आई। वालिदा की मौत का दाग़ तो मुहम्मद हुसैन को एक साल

गुजरा लग ही चुका था, कि यका-यक उस के वालिद ताऊन का शिकार बने। इस से उसे सख्त सदमा पहुंचा। लेकिन मौत अभी उस पर और धावा (हमला) करने वाली थी। क्योंकि चंद ही रोज़ में उसकी अज़ीज़ बीबी को बुखार आया। गिलटी मालूम हुई और बहुत धोड़ धूप (भाग दौड़) करने पर भी वो उसे तीन दिन से ज़्यादा ना रोक सके। मुहम्मद हुसैन इन सदमों से दीवाना सा हो गया। और दरअसल उस की हालत निहायत दर्द-नाक थी। छोटे-छोटे दो बच्चे उस के पास थे। और उनकी सूरत देख-देख के उसे बहुत रोना आता था।

किसी ने क्या ख़ूब कहा है, कि जब इन्सान पस्त-हिम्मत (परेशान और बिना हिम्मत और हौसला के) और लाचार होता है तो खुदा को उस में काम करने का मौक़ा मिलता है। पादरी साहब से मुहम्मद हुसैन की मुलाकात तो थी ही। पस जब उन्होंने उस की मुसीबत की खबर सुनी। वो फ़ौरन उस के मकान पर आए। और इन्जील से पढ़ पढ़के निहायत तसल्ली की बातें उसे सुनाईं और मसीह को इस ख़ूबी से उस के आगे पेश किया कि मुहम्मद हुसैन से फिर रहा ना गया। और फ़ौरन बोल उठा कि बस अब देर ना कीजिए। मुझ और मेरे दोनों बच्चों को मसीही बना लीजिए। मैं चाहता हूँ कि मैं उन तमाम मुक़ामात में जहां मैंने मसीह की मुखालिफ़त की है जा के मसीह की शहादत दूं। इस पर पादरी साहब फ़ौरन उसे और उस के बच्चों को अपने घर ले आए। और मिशन अहाते के खास-खास मसीहियों से उस की मुलाकात कराई। उन सभों ने उसकी बड़ी आओ-भगत (मेज़बानी) की और उसे बड़ी तसल्ली दी। इसी हफ़्ते में मुहम्मद हुसैन के दोनों बच्चे मसीही जमाअत में शरीक किए गए। मुहम्मद हुसैन के बच्चे मिशन स्कूल में तालीम पाने लगे और वो खुद इल्म इलाही की आला तालीम के मदरिसा इल्म इलाही को भेजा गया। जहां वो मसीह के लिए ज़बरदस्त आला बन गया। उस की शादी भी एक नेक मसीही ख़ातून के साथ हो गई। ये कहने की ज़रूरत नहीं कि जब बज़रीया तार बुज़ुर्ग पास्टर गंगाराम और उन मुनादों को जिनसे मुहम्मद हुसैन की बहस इस चबूतरे (मुरब्बा या मुस्ततील बनाई हुई ऊंची जगह जहां पर लोग बैठते हैं) पर करीब दो साल के गुज़रे हुए थी खबर दी गई, कि मुहम्मद हुसैन और उस के दो बच्चे मसीही हो गए तो उन्हें बहुत खुशी हासिल हुई। आज हम मौलवी मुहम्मद हुसैन को जगह ब जगह मसीह मस्लूब की गवाही देते हुए पाते और जानते हैं कि “आस्मान की बादशाहत और खमीर की मानिंद है। जिसे किसी औरत ने लेकर पैमाने आटे में मिला दिया और होते-होते सब खमीर हो गया।” (मत्ती 13:33) ये खमीर मुहम्मद हुसैन में एक छोटे से मिशन स्कूल के उस्ताद के ज़रीये गोया मिलाया

गया। और आज तो मुहम्मद हुसैन सब खमीर है। ऐ मसीहा कार गुज़ार “अपनी रोटी पानियों पर डाल दे और बहुत दिन बाद तो उसे फिर पाएगा।” (वाइज़ 11:1)

मसीही प्रैस लाहौर में मिस्टर गुलाम कादिर मसीही प्रिंटर व मालिक मसीही प्रैस के
एहतिमाम से छपा

और

मिस्टर एफ़. डी. वारिस सेकरेट्री पंजाब रिलीजियस बुक सोसाइटी लाहौर ने शाएअ किया।